CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/C/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मनुष्य और प्रकृति का गहरा नाता है। हमारा शरीर पाँच प्राकृतिक तत्त्वों से ही बना हुआ है। हमारा परिवेश भी प्रकृति के ही आधार पर बना हुआ है। मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है। विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं। हरे-भरे जंगलों को काटकर, कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं; नहरों, नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक हो गई है। मानव के स्वार्थ ने गंगा जैसी पवित्र नदी तक को नहीं छोड़ा है। कल-कारखानों एवं गाड़ियों द्वारा इतना प्रदूषण उत्सर्जित किया जा रहा है कि कई बार तो सही से साँस लेना भी दुष्कर कार्य प्रतीत होता है।

हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं। प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं, यह पूर्णतया सत्य है; किन्तु क्या हमने प्रकृति को प्राकृतिक रूप में रहने दिया है। मोबाइल, टी.वी. आदि की स्क्रीन पर हमें सारे दृश्य अप्रतिम सुन्दर लगते हैं, किन्तु प्रकृति के साहचर्य में हम नहीं जाना चाहते और जाते भी हैं तो वहाँ भी हम प्रदूषण फैलाने में कोई कमी शेष नहीं छोड़ते। अभिमन्यु की तरह हम तथाकथित विकास के चक्रव्यूह में घुस तो गए हैं, पर उसे पार करने का मार्ग हमें सूझ ही नहीं रहा है। हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते हैं। सारी प्रकृति का दोहन स्वयं ही कर लेना चाहते हैं, ऊपर से झूठा अभिमान यह कि यह सब हम आगामी पीढ़ी का भविष्य रोशन करने के लिए ही कर रहे हैं।

जीवन की सार्थकता इसी में है कि भौतिकता की चाशनी में डूबे यांत्रिक जीवन को छोड़कर वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए और सीमित साधनों के उपयोग से ही जीवन को सुन्दरतम एवं आनन्दित बनाया जाए। इसका प्रारम्भ दूसरों को उपदेश देकर नहीं, अपितु स्वयं से प्रारम्भ करके अनुकरणीय उदाहरण छोड़ा जाए। जब सब ऐसा करने की ओर प्रवृत्त होंगे, तब हमारा परिवेश और जीवन सुन्दरतम एवं मधुरतम हो जाएगा। [10 अंक]

1(i). मनुष्य निरन्तर किसकी ओर अग्रसर रहता है ? [1 अंक]

(A) प्रकृति की ओर

(B) विकास की ओर

(C) विनाश की ओर

(D) धर्म की ओर

सही उत्तर: (B) विकास की ओर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना गद्यांश का स्पष्ट वाक्य है, "मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है। यहाँ सतत का अर्थ लगातार और अग्रसर का अर्थ आगे बढ़ना है। इसलिए प्रश्न में प्रयुक्त निरन्तर शब्द इसी विचार को दोहराता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच प्रकृति से मनुष्य का गहरा संबंध अवश्य है, पर उसकी निरन्तर गति का लक्ष्य यहाँ प्रकृति नहीं बताया गया। विनाश अनियंत्रित विकास का परिणाम है, लक्ष्य नहीं। धर्म की ओर बढ़ने की चर्चा गद्यांश में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: विकास की ओर।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(ii). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A) : विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं।
कारण (R) : विकास के साथ-साथ प्रकृति को नष्ट होने से भी बचाना होगा। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।
(C) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग-अलग जाँची जाती है।
- दोनों सत्य होने पर यह भी देखना चाहिए कि कारण कथन का आशय स्पष्ट करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की जाँच कथन (A) सही है। लेखक विकास का विरोध नहीं करता, बल्कि प्रकृति को नष्ट करके होने वाले विकास पर आपत्ति करता है। इसलिए विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों साथ आवश्यक हैं।

चरण 2: कारण की जाँच कारण (R) भी सही है। विकास के साथ प्रकृति को नष्ट होने से बचाना गद्यांश के केंद्रीय विचार के अनुरूप है। प्राकृतिक आधार सुरक्षित रहेगा तभी विकास जीवन के लिए उपयोगी हो सकेगा।

चरण 3: व्याख्या के संबंध की जाँच कारण स्पष्ट करता है कि विकास करते समय प्रकृति का विनाश क्यों नहीं होना चाहिए: विकास और संरक्षण साथ चलने चाहिए। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या है। (A) में गलत व्याख्या, (B) में दोनों गलत और (C) में कथन गलत मानना गद्यांश के विरुद्ध है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है। कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में पहले दोनों की सत्यता जाँचें; उसके बाद ही उनके बीच व्याख्या का संबंध तय करें।

1(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
I. नदियों में स्वच्छ जल की मात्रा बढ़ती जा रही है।
II. विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं।
III. हमारे परिवेश और प्राकृतिक परिवेश के आधार भिन्न हैं।
ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) I, II एवं III सभी

सही उत्तर: (B) केवल II

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना कथन II गद्यांश से पुष्ट होता है, क्योंकि हरे-भरे जंगल काटकर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जाने की बात स्पष्ट रूप से कही गई है। यह प्राकृतिक परिवेश को भवनों और निर्माणों में बदलने का संकेत है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच कथन I गलत है, क्योंकि नदियों में स्वच्छ जल के स्थान पर दूषित पानी अधिक होने की बात है। कथन III भी गलत है, क्योंकि हमारा परिवेश प्रकृति के आधार पर बना बताया गया है। अतः केवल I, केवल III और सभी कथन सही होने वाले विकल्प स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: केवल II।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(iv). मनुष्य सारी खुशियाँ कहाँ तलाश रहा है ? [1 अंक]

(A) प्राकृतिक परिवेश में

(B) धार्मिक परिवेश में

(C) हरे-भरे वनों में

(D) भौतिक साधनों में

सही उत्तर: (D) भौतिक साधनों में

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना लेखक कहता है, "हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य सुख पाने के लिए बाहरी वस्तुओं और यांत्रिक सुविधाओं पर निर्भर होता जा रहा है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच प्राकृतिक परिवेश और हरे-भरे वन मनुष्य को आनंद देते हैं, पर वर्तमान में सारी खुशियाँ वहाँ तलाशने की बात नहीं कही गई। धार्मिक परिवेश का इस प्रसंग में उल्लेख ही नहीं है। प्रश्न वर्तमान प्रवृत्ति पूछता है, आदर्श जीवन की दिशा नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है: भौतिक साधनों में।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(ix). जीवन को सुन्दरतम बनाने के लिए मनुष्य को निम्नलिखित में से कौन-से कदम उठाए जाने की जरूरत है ? [1 अंक]

(A) साधनों का अधिकाधिक उपयोग करना

(B) दूसरों को अधिकाधिक उपदेश देना

(C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

(D) भौतिकता की चाशनी का आनन्द उठाना

सही उत्तर: (C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।

- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में सीमित साधनों के उपयोग से जीवन सुंदर बनाने का संदेश दिया गया है। साथ ही लेखक दूसरों को उपदेश देने के स्थान पर स्वयं से शुरुआत करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने की बात करता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच अधिकाधिक साधनों का उपयोग सीमित उपयोग के विपरीत है। केवल दूसरों को उपदेश देना लेखक की दृष्टि में पर्याप्त नहीं है। भौतिकता की चाशनी में डूबे रहने को छोड़ने का सुझाव दिया गया है; इसलिए उसका आनंद उठाना भी उचित कदम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(v). मनुष्य का मन क्या देखकर आनन्द का अनुभव करता है ? [1 अंक]

(A) नए-नए चलचित्र

(B) प्राकृतिक दृश्य

(C) कंक्रीट के जंगल

(D) मोबाइल स्क्रीन पर आने वाले संदेश

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक दृश्य

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है, "प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं। इससे मनुष्य के मन और प्रकृति के बीच बने हुए आत्मीय संबंध का पता चलता है। प्रश्न इसी प्रत्यक्ष आनंद के स्रोत को पूछता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच नए चलचित्र और मोबाइल पर आने वाले संदेशों को मन के आनंद का यह स्रोत नहीं बताया गया। कंक्रीट के जंगल प्राकृतिक सुंदरता के विनाश के उदाहरण हैं। स्क्रीन पर दृश्य सुंदर लगने की चर्चा है, पर उससे प्राकृतिक दृश्यों के आनंद वाला तथ्य बदल नहीं जाता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: प्राकृतिक दृश्य।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(vi). मनुष्य और प्रकृति के संबंध के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य लगातार प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है।

(B) मनुष्य प्रकृति के साहचर्य में नहीं जाना चाहता।

(C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

(D) मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है।

सही उत्तर: (C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना गद्यांश में दूषित नदियों, कारखानों तथा गाड़ियों के प्रदूषण और प्रकृति के पास जाकर भी उसे प्रदूषित करने का वर्णन है। अत: परिवेश को प्रदूषण रहित रखने वाला कथन वास्तविक स्थिति के ठीक विपरीत है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच प्रकृति से छेड़छाड़, उसके साहचर्य से दूरी और यांत्रिक जीवन की ओर बढ़ना तीनों गद्यांश से पुष्ट हैं। इसलिए (A), (B) और (D) सत्य कथन हैं। प्रश्न में असत्य कथन पूछा गया है, अत: इन सत्य कथनों को उत्तर नहीं बनाया जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(vii). विकास के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करके आगामी पीढ़ी के लिए मनुष्य क्या कर रहा है ? गद्यांश के आधार पर लिखिए। [1 अंक]

(A) उसका भविष्य सँवार रहा है।

(B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

(C) उसका भविष्य रोशन कर रहा है।

(D) उसके भविष्य के लिए व्यापक तैयारी कर रहा है।

सही उत्तर: (B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना लेखक कहता है कि हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय कर रहे हैं। प्रकृति का अत्यधिक दोहन और प्रदूषण भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ तथा स्वस्थ जीवन के साधन कम कर देते हैं। धूमिल शब्द इसी अंधकारमय भविष्य का भाव व्यक्त करता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच भविष्य सँवारने, रोशन करने और उसके लिए व्यापक तैयारी करने वाले कथन सकारात्मक हैं। गद्यांश में भविष्य रोशन करने की बात मनुष्य के झूठे अभिमान के रूप में आई है, लेखक के वास्तविक निष्कर्ष के रूप में नहीं। इसलिए ये तीनों विकल्प उसके आशय से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(viii). मनुष्य जीवन की सार्थकता किसमें है ? [1 अंक]

(A) यांत्रिक जीवन में

(B) प्राकृतिक जीवन में

(C) नगरीय जीवन में

(D) ग्रामीण जीवन में

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक जीवन में

हल:

अवधारणा:

- उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन और उसके प्रसंग के आधार पर चुना जाता है।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और प्रत्येक विकल्प का अर्थ मिलाकर सही विकल्प निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश से प्रमाण पहचानना अंतिम अनुच्छेद में लेखक जीवन की सार्थकता वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाने में बताता है। सीमित साधनों के साथ प्रकृति के अनुकूल रहना जीवन को सुंदर और आनंदपूर्ण बनाने का उपाय है। यही प्रश्न का प्रत्यक्ष उत्तर है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच यांत्रिक जीवन को छोड़ने का निर्देश दिया गया है, इसलिए वह सार्थकता का आधार नहीं है। नगरीय और ग्रामीण जीवन स्थान आधारित श्रेणियाँ हैं; लेखक किसी स्थान को नहीं, प्राकृतिक जीवन पद्धति को महत्त्व देता है। केवल गाँव में रहना भी अपने आप इस विचार को पूरा नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: प्राकृतिक जीवन में।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न का मुख्य शब्द रेखांकित करें, फिर गद्यांश के उसी आशय वाले वाक्य से विकल्प मिलाएँ।

1(x). उपर्युक्त गद्यांश में लेखक की चिंता का विषय है : [1 अंक]

(A) मनुष्य की भौतिक साधनों पर बढ़ती निर्भरता

(B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

(C) मनुष्य का प्रकृति से विमुख होना

(D) मनुष्य का स्क्रीन पर समय बिताना

सही उत्तर: (B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय चिंता पहचानने के लिए पूरे गद्यांश में बार-बार उभरते विषय को देखना चाहिए।
- उदाहरणों और निष्कर्ष के बीच संबंध स्थापित करने से व्यापक आशय स्पष्ट होता है।

चरण 1: प्रकृति पर पड़ते प्रभाव देखें लेखक जंगलों की कटाई, नदियों के दूषित होने और वायु-प्रदूषण की चर्चा करता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुष्य विकास और सुविधाओं के लिए प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहा है। इससे जीवन को सहारा देने वाला प्राकृतिक परिवेश बिगड़ रहा है।

चरण 2: सभी विकल्पों को परखें (B) इन सभी समस्याओं को मनुष्य और प्रकृति के बीच बढ़ते असंतुलन के रूप में समेटता है। (A) में भौतिक साधनों की निर्भरता इस असंतुलन का एक कारण है। (C) प्रकृति से दूरी को बताता है, पर संपूर्ण पर्यावरण-संकट को नहीं समेटता। (D) में स्क्रीन पर समय बिताना केवल एक उदाहरण है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक की मुख्य चिंता मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन है। अत: सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय ऐसा विकल्प लें जिसमें गद्यांश के सभी प्रमुख उदाहरण समा सकें।

2(a). मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण मन हुआ जाता है,
कि जगत स्वायत्त हुआ जाता है। [5 अंक]

2(a)(i). 'मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है' पंक्ति में 'महाकाव्य पीड़ा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) प्रत्येक व्यक्ति के मन में महाकाव्य की तरह असीम पीड़ा लिखी है।
(B) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महाकाव्य की तरह असीम अनुभव छिपे हैं।
(C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।
(D) प्रत्येक व्यक्ति के मन में पीड़ा तो है, किन्तु सब पर महाकाव्य की रचना नहीं हो सकती है।

सही उत्तर: (C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य में किसी शब्द का आशय उसके आसपास की पंक्तियों से निर्धारित होता है।
- महाकाव्य की व्यापकता यहाँ मनुष्य की गहन और विस्तृत पीड़ा की ओर संकेत करती है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ समझें कवि हर मनुष्य के भीतर संवेदना और मूल्य देखता है। वह प्रत्येक छाती में अधीर आत्मा तथा प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा अनुभव करता है। इसका अर्थ है कि व्यक्तियों के अंतर्मन में इतने गहरे पीड़ादायक अनुभव हैं कि वे विस्तृत काव्य का विषय बन सकते हैं।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (C) पीड़ादायक अनुभवों और उनसे महाकाव्य रचे जाने की संभावना, दोनों को व्यक्त करता है। (A) मन में पीड़ा लिखी होने की बात करके संकेत को अधूरा रखता है। (B) सामान्य अनुभवों की चर्चा करता है और पीड़ा का विशेष अर्थ खो देता है। (D) रचना की संभावना नकारकर कवि के विश्वास से उलट बात कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष महाकाव्य पीड़ा का आशय अंतर्मन के असीम पीड़ादायक अनुभव हैं, जिन पर महाकाव्य रचा जा सकता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में मूल पद के दोनों संकेत बचाएँ: यहाँ पीड़ा की गहराई और महाकाव्य बनने की संभावना।

2(a)(ii). 'पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ' पंक्ति का क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) कवि सबके नज़दीक रहना चाहता है।

(B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

(C) कवि सबके अनुभवों का लाभ उठाना चाहता है।

(D) कवि सभी रास्तों से गुज़रना चाहता है।

सही उत्तर: (B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का भावार्थ आसपास व्यक्त संवेदना से समझना चाहिए।
- किसी के भीतर से गुजरना यहाँ उसके अनुभवों को आत्मीयता से महसूस करने का संकेत है।

चरण 1: कवि की इच्छा पहचानें पिछली पंक्तियों में कवि हर व्यक्ति की वाणी में गहरी पीड़ा देखता है। इसके बाद सबमें से गुजरने की उसकी इच्छा बताती है कि वह उन लोगों की आंतरिक वेदना को अनुभव करना चाहता है। यह दूसरों के दुख में सहभागी बनने की संवेदनशील इच्छा है।

चरण 2: अन्य अर्थों को जाँचें (B) दूसरों के जीवन की पीड़ा अनुभव करने का भाव सही ढंग से प्रकट करता है। (A) केवल निकट रहने की बात करता है, इसलिए आंतरिक संवेदना अधूरी रह जाती है। (C) अनुभवों का लाभ उठाने की स्वार्थपरक बात करता है। (D) रास्तों से गुजरने का शाब्दिक अर्थ लेता है, जबकि यहाँ मनुष्यों की अनुभूतियों का संदर्भ है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रूपकात्मक पंक्ति का अर्थ लेते समय पिछली पंक्ति के मुख्य भाव से उसका संबंध अवश्य जोड़ें।

2(a)(iii). जो दूसरों के दुख को अपना दुख मानकर चलते हैं, समाज उनके बारे में क्या सोचता है ? [1 अंक]

(A) उन्हें समझदार समझता है।

(B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

(C) उनके बारे में सोचता ही नहीं है।

(D) उन्हें चालाक समझता है।

सही उत्तर: (B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

हल:

अवधारणा:

- कविता में सामाजिक प्रतिक्रिया और कवि की अपनी मान्यता अलग हो सकती हैं।
- उत्तर के समर्थन में कविता के प्रत्यक्ष शब्दों और प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: कविता में संकेत खोजें कवि कहता है कि वह खुद को दूसरों को देता फिरता है और बेवकूफ बनने की खातिर अपने को सब तरफ लिए फिरता है। ठगे जाने पर भी उसे आनंद आता है। इससे समझ आता है कि दूसरों की पीड़ा को अपनाने वाले को समाज व्यवहारकुशल नहीं मानता और बेवकूफ समझता है।

चरण 2: सभी विकल्पों का परीक्षण करें (B) कविता में आए बेवकूफ और मूर्ख जैसे संकेतों से मेल खाता है। (A) समझदार कहना इस सामाजिक दृष्टि के विपरीत है। (C) की उपेक्षा वाली बात पाठ में नहीं है, क्योंकि यहाँ उसके व्यवहार का मूल्यांकन मौजूद है। (D) चालाक कहना भी गलत है; कवि लाभ लेने के बजाय स्वयं ठगा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष दूसरों के दुख को अपना दुख मानने वालों को समाज बेवकूफ समझता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक दृष्टि पूछे जाने पर कवि की उदार भावना के बजाय समाज द्वारा दिए गए विशेषण पहचानें।

2(a)(iv). जब लोग कवि को भावनात्मक रूप से ठगते हैं तो कवि को कैसा महसूस होता है ? [1 अंक]

(A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

(B) कवि को असीम दुख की प्राप्ति होती है।

(C) कवि की भावनाओं को ठेस पहुँचती है।

(D) कवि के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सही उत्तर: (A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में व्यक्त अनुभव को सामान्य व्यवहार के आधार पर नहीं, कवि के अपने कथन के आधार पर समझना चाहिए। कवि दूसरों का दुख बाँटते हुए ठगे जाने में भी आनंद अनुभव करता है।
- भावनात्मक प्रतिक्रिया का प्रश्न संबंधित पंक्तियों के स्पष्ट अर्थ से हल होता है। यहाँ अपने ठगे जाने को देखने में मजा आने की अभिव्यक्ति निर्णायक है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियों को पहचानें कवि कहता है कि वह सबके अपने को लिए फिरता है और यह देखकर बड़ा मजा आता है कि वह ठगा जाता है। इस कथन में ठगी के बावजूद मिलने वाले आनंद की स्वीकृति है। कवि का दूसरों से भावनात्मक जुड़ाव इतना गहरा है कि वह उनके लिए स्वयं को ठगे जाने देता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें विकल्प (B) का असीम दुख और विकल्प (C) की भावनाओं को ठेस लगना सामान्य परिस्थितियों में संभावित प्रतिक्रियाएँ हैं, पर इस प्रसंग में कवि ने मजा आने की बात कही है। विकल्प (D) भी गलत है, क्योंकि कवि अपनी स्पष्ट भावनात्मक अनुभूति व्यक्त करता है। इसलिए आनंद का विकल्प (A) उसके कथन के अनुरूप है।

चरण 3: निष्कर्ष भावनात्मक रूप से ठगे जाने पर भी कवि को आनंद की प्राप्ति होती है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में ठगी का सामान्य परिणाम न चुनें; अपने ठगे जाने को देखकर मजा आने वाली पंक्ति को उत्तर का आधार बनाएँ।

2(a)(v). उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के विषय में पता चलता है कि वह : [1 अंक]

(A) भावुकता से परिपूर्ण है।

(B) विनम्रता से परिपूर्ण है।

(C) व्यावहारिकता से परिपूर्ण है।

(D) कोमलता से परिपूर्ण है।

सही उत्तर: (A) भावुकता से परिपूर्ण है।

हल:

अवधारणा:

- किसी कवि के व्यक्तित्व का अनुमान उसके कथन, अनुभूतियों और दूसरों के प्रति व्यवहार से लगाया जाता है। यहाँ दूसरों का दुख स्वयं अनुभव करना उसकी भावुकता का प्रमुख प्रमाण है।
- अपठित काव्यांश में उत्तर का आधार कवि की अभिव्यक्ति और उसका संदर्भ होता है; मिलते-जुलते विकल्पों में सबसे सटीक भाव चुनना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश का भाव पहचानें कवि प्रत्येक हृदय के भीतर पीड़ा देखता है और सबके दुखों से गुजरना चाहता है। दूसरों के लिए अपना जीवन लगा देने तथा ठगे जाने पर भी उनके साथ बने रहने की उसकी प्रवृत्ति गहरी भावनात्मक सहभागिता दिखाती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (B) की विनम्रता मुख्य विषय नहीं है, क्योंकि कविता में नम्र व्यवहार की अपेक्षा दूसरों की पीड़ा अनुभव करने पर बल है। विकल्प (C) की व्यावहारिकता ठगे जाने की स्थिति से मेल नहीं खाती। विकल्प (D) की कोमलता निकट

अर्थ देती है, पर पूरे काव्यांश की भावनात्मक तीव्रता को विकल्प (A) अधिक स्पष्ट रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश से स्पष्ट है कि कवि भावुकता से परिपूर्ण है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कवि के स्वभाव से जुड़े प्रश्न में अकेले शब्द के बजाय पूरे अंश में बार-बार प्रकट होने वाली प्रवृत्ति को उत्तर का आधार बनाएँ।

अथवा

2(b). बरसती साँझ है
स्थगित मेघों ने डाल दिया है
आसमान में डेरा
पहले गरजे भयंकर
चिंघाड़ उठे हों
हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में
लंबे सफेद दाँतों-सी कड़कदार बिजली
काली विशाल देह
धूमिल अँधेरे का विस्तार
ऋतु चक्र में परिवर्तन की इस बेला में
सावन के आवारा मेघ
भटकते हुए आए हैं
पृथ्वी का पता पूछते
बरसो हे मेघ
जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन
कि शरद अब आता होगा
आती होगी उसकी टपकाती देह
भरी-भरी हरी पृथ्वी
अब ठंडी चाँदनी से नहाएगी
धान को अभी पकना है
सुनहरा होना है
किसानों के बैरी न बनो मेघ
बरसो, बरसकर खाली करो गगन
हे अक्टूबर के अनाहूत मेघ ! [5 अंक]

2(b)(i). उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने आसमान में गरजते बादलों की तुलना किससे की है ? [1 अंक]

(A) लंबे सफेद दाँतों से
(B) हाथियों के झुंड से
(C) काली विशाल देह से
(D) धूमिल अँधेरे से

सही उत्तर: (B) हाथियों के झुंड से

हल:

अवधारणा:

- बादलों की गर्जना का अर्थ उनके तेज़, भयावह स्वर से है। उपमा पहचानते समय समान ध्वनि वाले उपमान को देखना चाहिए।
- सही विकल्प को मूल पंक्ति के आशय से मिलाएँ और दूसरे विकल्पों का संदर्भ जाँचें।

चरण 1: पाठ के संकेत समझें पद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि बादल पहले भयंकर गरजे, मानो क्षितिज में हाथियों के झुंड चिंघाड़ उठे हों। हाथियों की सामूहिक चिंघाड़ और मेघों की गड़गड़ाहट का ध्वनि-साम्य इस तुलना का आधार है। इसलिए प्रश्न में गरजते बादलों के लिए प्रयुक्त उपमान हाथियों का झुंड है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (B) पंक्तियों में दिया गया सीधा उपमान है। (A) लंबे सफेद दाँत बिजली की चमक का उपमान हैं, गर्जना का नहीं। (C) काली विशाल देह बादलों के रूप का चित्र है। (D) धूमिल अँधेरा उनके फैलने से बने दृश्य का वर्णन है; इनमें से कोई गर्जना की उपमा नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष आसमान में गरजते बादलों की तुलना हाथियों के झुंड से की गई है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: उपमा का विकल्प चुनते समय देखें कि प्रश्न ध्वनि पूछ रहा है या रंग और आकार; यहाँ चिंघाड़ ध्वनि का संकेत है।

2(b)(ii). 'सावन के आवारा मेघ आसमान में कब आए हैं ?' इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन :

I. सावन मास के प्रारंभ होने पर

II. सावन मास के अंत होने पर

III. वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के प्रारंभ होने पर

IV. ऋतु-चक्र में परिवर्तन की संधि-बेला पर

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल IV

(B) I और II

(C) III और IV

(D) II, III और IV

सही उत्तर: (C) III और IV

हल:

अवधारणा:

- काव्य में समय का निर्धारण स्पष्ट ऋतु-संकेतों और प्रसंग से किया जाता है। एकाधिक कथनों के प्रश्न में प्रत्येक कथन अलग जाँचना चाहिए।
- सही विकल्प को मूल पंक्ति के आशय से मिलाएँ और दूसरे विकल्पों का संदर्भ जाँचें।

चरण 1: पाठ के संकेत समझें कवि इन मेघों को अक्टूबर के अनाहूत मेघ कहता है। वह ऋतु-चक्र में परिवर्तन की बेला तथा शरद के आने का उल्लेख करता है। इससे स्पष्ट है कि वर्षा का समय समाप्त हो रहा है और शरद का आरंभ होने वाला है। इसलिए कथन III और IV, दोनों पद्यांश के समय-संदर्भ के अनुकूल हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें कथन I सावन के आरंभ और II सावन के अंत की बात करता है, जबकि प्रसंग अक्टूबर और शरद के आगमन का है। इसलिए (B) और (D) में गलत कथन आते हैं। (A) में केवल IV है और सही कथन III छूट जाता है। (C) में दोनों सही कथन III और IV साथ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मेघ वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद के आरंभ की संधि-बेला में आए हैं। सही विकल्प (C), अर्थात III और IV है।

त्वरित सुझाव: ऋतु का निर्णय केवल सावन शब्द से न करें; अक्टूबर और शरद के आगमन के स्पष्ट संकेतों को साथ पढ़ें।

2(b)(iii). 'जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन' — इन काव्य-पंक्तियों में 'आसमानी सिंहासन' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) आसमानी रंग का सिंहासन
(B) आसमान के समान सिंहासन
(C) आसमान रूपी सिंहासन
(D) आसमान से बना सिंहासन

सही उत्तर: (C) आसमान रूपी सिंहासन

हल:

अवधारणा:

- रूपक में एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का सीधा आरोप किया जाता है। प्रस्तुत पंक्तियों में आकाश को ऋतुओं के अधिकार-क्षेत्र के रूप में देखा गया है।
- सही विकल्प को मूल पंक्ति के आशय से मिलाएँ और दूसरे विकल्पों का संदर्भ जाँचें।

चरण 1: पाठ के संकेत समझें बादल आकाश में डेरा डाले हुए हैं। कवि उनसे बरसकर उसे खाली करने को कहता है ताकि शरद का आगमन हो सके। यहाँ आकाश ही वह स्थान है जिस पर अब शरद का अधिकार होगा। इसलिए आकाश को सिंहासन के रूप में कल्पित किया गया है; कोई वास्तविक राजसिंहासन अभिप्रेत नहीं है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (C) का आसमान रूपी सिंहासन इस रूपक को ठीक व्यक्त करता है। (A) उसे केवल आसमानी रंग का सिंहासन मानता है। (B) समानता बताता है, जबकि पंक्ति में आकाश पर सिंहासन का आरोप है। (D) आसमान से बनी किसी वस्तु का अर्थ देता है, जिसका प्रसंग में आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष आसमानी सिंहासन का अभिप्राय आसमान रूपी सिंहासन है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ खोलते समय रूपी शब्द लगाकर देखें: यहाँ आकाश रूपी सिंहासन कहने से भाव स्पष्ट होता है।

2(b)(iv). 'आती होगी उसकी टपकाती देह' – काव्य-पंक्ति के संदर्भ में लिखिए की शरद की देह क्या टपकाती आएगी ? [1 अंक]

(A) ठंडी चाँदनी
(B) बारिश की बूँदें
(C) ओस की बूँदें
(D) चाँदनी-सी ओस

सही उत्तर: (C) ओस की बूँदें

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में ऋतु को मनुष्य जैसी देह और क्रिया दी जा सकती है। शरद के आगमन का बिंब वर्षा से भिन्न उसके अपने प्राकृतिक लक्षणों से समझना चाहिए।
- सही विकल्प को मूल पंक्ति के आशय से मिलाएँ और दूसरे विकल्पों का संदर्भ जाँचें।

चरण 1: पाठ के संकेत समझें कवि शरद को आती हुई सजीव सत्ता की तरह देखता है और उसकी देह से कुछ टपकने की कल्पना करता है। शरद की शीतलता में पड़ने वाली ओस की बूँदें इस बिंब को स्पष्ट करती हैं। बादलों को बरसकर हट जाने को कहा गया है, इसलिए यह टपकना वर्षा के जारी रहने का संकेत नहीं है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (C) ओस की बूँदें टपकने की क्रिया का उपयुक्त आशय हैं। (A) ठंडी चाँदनी अगली पंक्तियों में पृथ्वी के नहाने से जुड़ी है। (B) बारिश की बूँदें मेघों की क्रिया होंगी, शरद की विशेषता नहीं। (D) चाँदनी-सी ओस में अतिरिक्त तुलना जोड़ता है, जो इस पंक्ति में नहीं कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद की देह ओस की बूँदें टपकाती आएगी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पास की हर पंक्ति को अलग बिंब से जोड़ें: टपकाती देह ओस से और पृथ्वी का नहाना ठंडी चाँदनी से संबंधित है।

2(b)(v). कवि सावन के बादलों से आकाश खाली करने के लिए क्यों कह रहा है ? [1 अंक]

(A) लगातार होने वाली बारिश से थकने के कारण

(B) बादलों को अनिमंत्रित अतिथि मानने के कारण

(C) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए

(D) खेतों में खड़ी फ़सल के पकने के लिए

सही उत्तर: (D) खेतों में खड़ी फ़सल के पकने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कवि के अनुरोध का कारण उसकी अगली पंक्तियों में दिए गए परिणाम से पहचाना जाता है। पूरे पद्यांश के संदर्भ से सबसे विशिष्ट उद्देश्य चुनना चाहिए।
- सही विकल्प को मूल पंक्ति के आशय से मिलाएँ और दूसरे विकल्पों का संदर्भ जाँचें।

चरण 1: पाठ के संकेत समझें कवि कहता है कि धान को अभी पकना और सुनहरा होना है, फिर मेघों से किसानों के बैरी न बनने की प्रार्थना करता है। इस क्रम से स्पष्ट होता है कि असमय बादल और वर्षा फसल के पकने में बाधक हो सकते हैं। इसलिए वह मेघों से बरसकर आकाश खाली करने को कहता है ताकि खेतों की फसल पक सके।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (D) धान के पकने और किसानों के हित के स्पष्ट कारण को व्यक्त करता है। (A) व्यक्तिगत थकान की बात है, जिसका पाठ में आधार नहीं। (B) अनाहूत विशेषण को कारण मानता है, पर फसल का उद्देश्य छोड़ देता है। (C) शरद के स्वागत का व्यापक प्रसंग है, लेकिन अंतिम अनुरोध का ठोस कृषि-संबंधी कारण (D) में अधिक स्पष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि खेतों में खड़ी फसल के पकने के लिए बादलों से आकाश खाली करने को कहता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: क्यों वाले प्रश्न में अनुरोध से ठीक पहले का कारण खोजें: धान को पकना है और मेघों को किसानों का बैरी नहीं बनना चाहिए।

3(i). निम्नलिखित में से समाचार-पत्र की आवाज़ किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) स्तंभ लेख

(B) फ़ीचर

(C) विशेष लेख

(D) संपादकीय

सही उत्तर: (D) संपादकीय

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र की संस्थागत राय।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार संपादकीय समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र का अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसीलिए उसे समाचार-पत्र की आवाज़ कहा जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच स्तंभ लेख सामान्यतः किसी नियमित लेखक की निजी दृष्टि व्यक्त करता है। फ़ीचर विषय का रोचक और विस्तृत वर्णन करता है। विशेष लेख किसी विषय की विवेचना करता है; वह अनिवार्यतः समाचार-पत्र की आधिकारिक राय नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है : संपादकीय।

त्वरित सुझाव: समाचार-पत्र की अपनी राय का संकेत मिलते ही संपादकीय पहचानें; लेखक की निजी राय को स्तंभ लेख से अलग रखें।

3(ii). पत्रकारीय लेखन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कच्चा माल किससे प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) संपादकीय से

(B) फ़ीचर से

(C) साक्षात्कार से

(D) स्तंभ लेख से

सही उत्तर: (C) साक्षात्कार से

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय सामग्री के स्रोत।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार साक्षात्कार में पत्रकार प्रश्न पूछकर संबंधित व्यक्ति से तथ्य, अनुभव, विचार और प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करता है। यही सूचना आगे समाचार या अन्य पत्रकारीय रचना तैयार करने का कच्चा माल बनती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच संपादकीय, फ़ीचर और स्तंभ लेख सूचनाओं के आधार पर तैयार की गई लेखन-विधाएँ हैं। यहाँ प्रश्न तैयार रचना के प्रकार का नहीं, लेखन के लिए प्राथमिक सामग्री जुटाने के साधन का है। इसलिए इन तीनों के स्थान पर साक्षात्कार उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है : साक्षात्कार से।

त्वरित सुझाव: कच्चा माल सूचना जुटाने का संकेत है; तैयार लेखन-विधाओं के बजाय प्रश्न पूछकर जानकारी लेने वाले साक्षात्कार को चुनें।

3(iii). रेडियो समाचार की भाषा शैली किस प्रकार की होनी चाहिए ? [1 अंक]

(A) मुहावरेदार आम बोलचाल की भाषा

(B) समाचार वाचक के लिए सहज पठनीय भाषा

(C) तत्सम शब्द प्रधान भाषा

(D) आम बोलचाल की भाषा

सही उत्तर: (D) आम बोलचाल की भाषा

हल:

अवधारणा:

- श्रव्य माध्यम की सहज भाषा।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार रेडियो का श्रोता समाचार को सुनता है और मुद्रित पाठ की तरह लौटकर दोबारा नहीं पढ़ सकता। इसलिए समाचार की भाषा परिचित, सरल और आम बोलचाल की होनी चाहिए, जिससे अर्थ सुनते ही स्पष्ट हो जाए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में मुहावरेदार भाषा का अनावश्यक आग्रह है; मुहावरे अर्थ ग्रहण में बाधा भी बन सकते हैं। (B) वाचक की सुविधा बताता है, जबकि मूल कसौटी श्रोता की समझ है। (C) की तत्सम-प्रधान भाषा सामान्य श्रोता के लिए कठिन हो सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है : आम बोलचाल की भाषा।

त्वरित सुझाव: रेडियो की भाषा चुनते समय श्रोता को सामने रखें; वह समाचार सुनते हुए कठिन शब्द दोबारा पढ़ नहीं सकता।

3(iv). समाचार लेखन के ककारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए :

I. क्या, कौन, कब और कहाँ ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं।

II. क्यों और कैसे विश्लेषणात्मक पहलू पर बल देते हैं।

III. क्या और कब विश्लेषणात्मक पहलू पर बल देते हैं।

ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) I और II

(D) केवल III

सही उत्तर: (C) I और II

हल:

अवधारणा:

- समाचार के छह ककार।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार क्या से घटना, कौन से व्यक्ति, कब से समय और कहाँ से स्थान का पता चलता है। ये घटना से जुड़े प्रत्यक्ष तथ्य हैं; इसलिए कथन I सही है। क्यों घटना का कारण और कैसे उसकी प्रक्रिया स्पष्ट करता है; इसलिए कथन II भी सही है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कथन III गलत है, क्योंकि क्या और कब तथ्यात्मक जानकारी देते हैं, विश्लेषण पर बल नहीं देते। (A) तथा (B) में गलत कथन III शामिल है। (D) केवल उसी गलत कथन को चुनता है। सही कथनों I और II का संयोजन (C) में है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है : I और II।

त्वरित सुझाव: पहले चार ककार तथ्य बताते हैं; अंतिम दो, क्यों और कैसे, कारण तथा प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं।

3(v). कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए :

	कॉलम 'क'		कॉलम 'ख'
A.	मुद्रित माध्यम	I.	मौसम
B.	फ़ीचर	II.	डेडलाइन
C.	टेलीविज़न	III.	250 – 2000 शब्द-सीमा
D.	आर्द्रता	IV.	एक रेखीय माध्यम

[1 अंक]

(A) A-IV, B-I, C-II, D-III

(B) A-II, B-III, C-IV, D-I

(C) A-III, B-IV, C-I, D-II

(D) A-I, B-III, C-II, D-IV

सही उत्तर: (B) A-II, B-III, C-IV, D-I

हल:

अवधारणा:

- माध्यमों की विशेषताओं का मिलान।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार मुद्रित माध्यम में प्रकाशन की निश्चित समय-सीमा अर्थात डेडलाइन का महत्त्व है, इसलिए A-II। फ़ीचर की दी गई शब्द-सीमा 250 से 2000 शब्द है, इसलिए B-III। टेलीविज़न में प्रसारण का क्रम चलता रहता है, इसलिए वह एक रेखीय माध्यम है और C-IV होगा।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच आर्द्रता मौसम से संबंधित स्थिति है, इसलिए D-I। इन चारों युग्मों को एक साथ रखने पर केवल (B) सही मिलता है। (A), (C) और (D) में मुद्रित माध्यम, फ़ीचर या आर्द्रता के संबंध गलत जोड़ दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है : A-II, B-III, C-IV, D-I।

त्वरित सुझाव: पहले आर्द्रता का मौसम से और फ़ीचर का शब्द-सीमा से मिलान करें; फिर शेष युग्म जाँचकर विकल्प चुनें।

---

4. सबसे तेज़ बौछारें गयी भादों गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके –
दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज़ उड़ सके –
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके –
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाज़ुक दुनिया [5 अंक]

4(i). कवि ने सवेरे की तुलना किससे की है ? [1 अंक]

(A) शशक की आँखों से
(B) शावक की आँखों से
(C) लाल रंग से
(D) सूरज से

सही उत्तर: (A) शशक की आँखों से

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में उपमा की पहचान।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार काव्यांश की पंक्ति 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' तुलना का सीधा आधार है। यहाँ सवेरे की लालिमा को खरगोश की आँखों की लालिमा के समान बताया गया है। शशक शब्द का अर्थ खरगोश है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) का शावक किसी प्राणी के बच्चे को कहते हैं; वह खरगोश का पर्याय नहीं है। (C) लाल रंग केवल समान गुण बताता है, तुलना का उपमान नहीं। (D) में दिया सूरज इस पंक्ति का उपमान नहीं है। इसलिए शशक की आँखें ही सटीक उत्तर हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है : शशक की आँखों से।

त्वरित सुझाव: शशक खरगोश का पर्याय है; उपमा में जैसा से पहले दिए उपमान को विकल्पों में उसके पर्याय से पहचानें।

4(ii). काव्यांश के आधार पर बताइए कि शरद का आगमन किस लिए होता है। [1 अंक]

(A) पतंग निर्मित करने का वातावरण सृजित करने के लिए

(B) पतंग उड़ाने का वातावरण सृजित करने के लिए

(C) पतंग लूटने का वातावरण सृजित करने के लिए

(D) पतंग संग्रहण का वातावरण सृजित करने के लिए

सही उत्तर: (B) पतंग उड़ाने का वातावरण सृजित करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति और बाल-उमंग का संबंध।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार कवि कहता है कि शरद आकाश को इतना मुलायम बनाता है 'कि पतंग ऊपर उठ सके' और हल्की, रंगीन चीज़ उड़ सके। इससे स्पष्ट है कि शरद के आगमन से पतंग उड़ाने के अनुकूल वातावरण बनता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में पतंग बनाने की क्रिया है, जिसका यहाँ वर्णन नहीं है। (C) में पतंग लूटने और (D) में संग्रह करने की बात है, जबकि पंक्तियों का बल आकाश में उड़ने पर है। इसलिए इन विकल्पों के स्थान पर पतंग उड़ाने वाला विकल्प सही है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है : पतंग उड़ाने का वातावरण सृजित करने के लिए।

त्वरित सुझाव: कि पतंग ऊपर उठ सके वाली पंक्ति उद्देश्य बताती है; उड़ने की क्रिया का विकल्प से सीधा मिलान करें।

4(iii). शरद ऋतु का आगमन कैसे होता है ? [1 अंक]

(A) पुरानी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए।

(B) नई चमकीली मोटरसाइकिल तेज़ चलाते हुए।

(C) नई चमकीली साइकिल धीमे-धीमे चलाते हुए।

(D) नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए।

सही उत्तर: (D) नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए।

हल:

अवधारणा:

- शरद ऋतु का मानवीकरण।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार पंक्ति 'अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए' शरद के आगमन का ढंग स्पष्ट करती है। शरद को साइकिल चलाने और घंटी बजाने वाले उत्साही व्यक्ति की तरह चित्रित किया गया है। यह चित्र गतिशीलता और नवीनता व्यक्त करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में पुरानी साइकिल कही गई है, जबकि काव्यांश में नई है। (B) में मोटरसाइकिल है, जबकि पाठ में साइकिल है। (C) में धीमे-धीमे चलाने की बात है, जबकि कवि तेज़ चलाने को कहता है। (D) में तीनों विशेषताएँ पाठ से मेल खाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है : नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए।

त्वरित सुझाव: वाहन, उसकी नवीनता और गति तीनों जाँचें: नई साइकिल और तेज़ गति का पूरा मेल ही सही विकल्प देता है।

4(iv). उपर्युक्त काव्यांश में 'पतंग' प्रतीकार्थ है : [1 अंक]

(A) दुनिया के सबसे पतले कागज़ से बनी चीज़ का

(B) बाँस की सबसे पतली कमानी से बनी खेल-सामग्री का

(C) बच्चों की उमंगों को पूरा करने के साधन का

(D) बच्चों की उमंगों के रंग-बिरंगे सपनों का

सही उत्तर: (D) बच्चों की उमंगों के रंग-बिरंगे सपनों का

हल:

अवधारणा:

- पतंग का प्रतीकात्मक अर्थ।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य संकेत और प्रत्येक विकल्प के अर्थ का मिलान करना चाहिए।

चरण 1: सही उत्तर का आधार पतंग हल्की और रंगीन है तथा आकाश की ओर उठती है। काव्यांश में उसके उड़ने के साथ सीटियों, किलकारियों और तितलियों की नाज़ुक दुनिया का आरंभ जुड़ा है। ये संकेत बालमन के उल्लास, कल्पना और रंग-बिरंगे सपनों को सामने लाते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) और (B) पतंग की भौतिक बनावट बताते हैं; प्रश्न प्रतीकार्थ पूछता है। (C) उसे उमंग पूरी करने का केवल साधन मानता है। (D) पतंग की उड़ान और रंगों में बच्चों की उमंगों के सपनों की अभिव्यक्ति पहचानता है, इसलिए वही अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है : बच्चों की उमंगों के रंग-बिरंगे सपनों का।

त्वरित सुझाव: प्रतीकार्थ पूछे जाने पर सामग्री के वर्णन से आगे जाएँ; पतंग के रंग और उड़ान को बालमन के सपनों से जोड़ें।

4(v). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

I. दुनिया की सबसे हल्की वस्तु पतंग नहीं है।

II. पतंग बाँस की सबसे हल्की कमानी से बनती है।

III. पतंग दुनिया की सबसे रंगीन चीज़ है।

काव्यांश पर आधारित ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) केवल III

(D) केवल II

सही उत्तर: (C) केवल III

हल:

अवधारणा:

- कथन की पुष्टि कविता के ठीक उन्हीं विशेषणों से करनी चाहिए जो उसमें आए हैं।
- पतंग के हल्केपन और रंगीन होने का वर्णन तथा कमानी का पतला होना अलग विशेषताएँ हैं।

चरण 1: कथन I और III को जाँचें कवि पतंग को दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ कहता है। इसलिए पतंग को सबसे हल्की वस्तु नहीं मानने वाला कथन I कविता के विरुद्ध है। पतंग को सबसे रंगीन चीज़ बताने वाला कथन III इसी पंक्ति से पुष्ट होता है।

चरण 2: कथन II और विकल्प जाँचें कविता में बाँस की सबसे पतली कमानी कहा गया है, सबसे हल्की कमानी नहीं। अतः दिए हुए पाठ पर आधारित कथन II की पुष्टि नहीं होती। विकल्प (A) में गलत कथन I, (B) में अपुष्ट कथन II और (D) में केवल अपुष्ट कथन

II है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन III सही है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पतली और हल्की को एक-दूसरे का पर्याय मानकर कथन सही न ठहराएँ; मूल विशेषण से मिलाएँ।

---

5. यहाँ एक अंतर चीन्ह लेना बहुत ज़रूरी है। मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि मन बंद रहना चाहिए। जो बंद हो जाएगा वह शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है, जो सनातन भाव से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लोगे, यह झूठ है और अगर 'इच्छानिरोधस्तप:' का ऐसा ही नकारात्मक असर हो तो वह झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो। यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दिखना बंद हो जाएगा ? क्या आँख बंद करके ही हम सपने नहीं लेते ? [5 अंक]

5(i). उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर 'मन खाली नहीं रहना चाहिए' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) मन में अधिकाधिक वस्तुओं की लालसा

(B) सांसारिक वस्तुओं के प्रति विरक्ति का भाव

(C) मन में संतोष और संयम की भावना

(D) मन में असीमित इच्छाओं का होना

सही उत्तर: (C) मन में संतोष और संयम की भावना

हल:

अवधारणा:

- मन का भरा होना संतोष तथा अपनी आवश्यकताओं की समझ से जुड़ा है।
- मन को खुला रखते हुए लोभ पर संयम रखना गद्यांश का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: आशय पहचानें लेखक मन को खाली रखने और बंद रखने में अंतर करता है। मन खाली न रहने का अर्थ अधिकाधिक वस्तुओं की लालसा पालना नहीं है। संतोष और संयम से भरा मन आकर्षणों के बीच भी अपना संतुलन बनाए रखता है और लोभ का शिकार नहीं होता।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें विकल्प (A) अधिक वस्तुओं के लोभ और (D) असीमित इच्छाओं को बढ़ावा देता है, इसलिए दोनों लेखक के आशय के विपरीत हैं। विकल्प (B) सांसारिक वस्तुओं से विरक्ति की बात करता है, जबकि लेखक मन को जबरन बंद करने के पक्ष में नहीं है। (C) संतोष और संयम का उपयुक्त अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष मन में संतोष और संयम की भावना होनी चाहिए। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मन का भरा होना पढ़ते समय संतोष को चुनें; वस्तुओं की असीमित लालसा को नहीं।

5(ii). 'क्या आँख फूटने पर रूप दिखना बंद हो जाएगा' का भाव है : [1 अंक]

(A) आँखें बंद करने से वस्तु का वास्तविक रूप दिखाई नहीं देगा

(B) यथार्थ में दिखाई नहीं देने वाली वस्तुओं का मोह समाप्त हो जाएगा

(C) मन को बंद करने से मन की इच्छाएँ समाप्त नहीं होती

(D) धैर्य और संयम के अभ्यास से ही मन को नियंत्रण में किया जा सकता है

सही उत्तर: (C) मन को बंद करने से मन की इच्छाएँ समाप्त नहीं होती

हल:

अवधारणा:

- बाहरी दृश्य से बचना मन के भीतर की इच्छा मिटाने के समान नहीं है।
- गद्यांश के आलंकारिक प्रश्न का भाव उसके बाद आए स्वप्न के उदाहरण से स्पष्ट होता है।

चरण 1: दृष्टांत का अर्थ समझें लेखक पूछता है कि आँख फोड़ देने पर क्या लोभ मिट जाएगा। फिर वह बताता है कि आँख बंद करके भी हम सपने देखते हैं। इससे स्पष्ट है कि दृश्य वस्तु सामने न होने पर भी उसकी छवि और इच्छा मन में बनी रह सकती है।

चरण 2: विकल्पों को मिलाएँ (C) इसी बात को सीधे कहता है कि मन को बंद करने से इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं। (A) केवल बाहरी दृश्य की बात करता है। (B) मोह समाप्त होने की बात कहकर लेखक के तर्क को उलट देता है। (D) संयम का व्यापक उपाय है, पर दिए गए प्रश्नात्मक वाक्य का सीधा भाव नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष मन को बंद करने से मन की इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अलंकारपूर्ण प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए उसके तुरंत बाद दिया गया उदाहरण भी पढ़ें।

5(iii). आदमी की जीत और लोभ की हार के लिए आवश्यक है : [1 अंक]

(A) मन का भरा होना

(B) मन पर नियंत्रण होना

(C) मन का खाली होना

(D) मन का शून्य होना

सही उत्तर: (B) मन पर नियंत्रण होना

हल:

अवधारणा:

- लोभ पर विजय का अर्थ मन का विवेकपूर्ण नियंत्रण है।
- मन को जबरन बंद या शून्य करना लेखक के अनुसार जड़ता है।

चरण 1: लेखक का तर्क पहचानें लेखक स्पष्ट करता है कि मन में नकार पैदा करके लोभ नहीं जीता जा सकता। ऐसा करना लोभ की जीत और आदमी की हार है। इसलिए मनुष्य को इच्छाओं का विवेकपूर्ण नियंत्रण करना चाहिए, जिससे वह आकर्षणों के सामने अपना संतुलन बनाए रख सके।

चरण 2: दिए विकल्पों में अंतर करें (B) मन पर नियंत्रण होने की बात कहता है और लोभ पर विजय का सीधा उपाय बताता है। (A) मन के भरे होने की बात करता है, पर यहाँ विजय के लिए अपेक्षित संयम को (B) अधिक स्पष्ट करता है। (C) खाली मन तथा (D) शून्य मन लेखक द्वारा समर्थित उपाय नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आदमी की जीत और लोभ की हार के लिए मन पर नियंत्रण आवश्यक है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: लोभ की हार पूछे जाने पर मन के संयम और विवेकपूर्ण नियंत्रण को मुख्य कसौटी बनाएँ।

5(iv). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : सब इच्छाओं को दबाना मनुष्य द्वारा संभव नहीं है।

कारण (R) : इच्छाओं को दबा करके मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

(C) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

(D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

सही उत्तर: (B) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण का मूल्यांकन गद्यांश की स्पष्ट स्थापना के अनुसार करना चाहिए।
- इच्छाओं का बलपूर्वक दमन और मोक्ष का मार्ग गद्यांश में एक नहीं माने गए हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें लेखक कहता है कि सब इच्छाओं का निरोध कर लेना झूठ है। इसलिए सब इच्छाओं को दबाना मनुष्य द्वारा संभव नहीं है, यह कथन (A) सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें लेखक दमन की ऐसी राह को रेगिस्तान की ओर जाने वाली राह कहता है और स्पष्ट करता है कि वह मोक्ष की राह नहीं है। इसलिए इच्छाओं को दबाकर मोक्ष मिलने का कारण (R) गलत है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प जाँचें गलत कारण सही कथन की व्याख्या नहीं कर सकता। दिए विकल्पों में (B) कथन को सही और कारण को उसकी गलत व्याख्या बताता है, इसलिए वही उपयुक्त है। (A) दोनों को सही कहता है; (C) कथन को गलत और कारण को सही कहता है; (D) दोनों को गलत कहता है। ये तीनों पाठ से मेल नहीं खाते।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है और दिया गया कारण उसकी गलत व्याख्या करता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण अलग-अलग जाँचें; मोक्ष की राह नहीं है वाले शब्द कारण का निर्णय करते हैं।

5(v). उपर्युक्त गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

I. मन में नकार द्वारा लोभ को जीता जा सकता है।

II. बलपूर्वक मन की बंदिश जड़ता के समान है।

III. बलपूर्वक मन की बंदिश आदमी की पराजय है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल I

(B) केवल II

(C) II और III

(D) I, II और III सभी

सही उत्तर: (C) II और III

हल:

अवधारणा:

- लेखक मन में नकार और बलपूर्वक बंदिश को लोभ पर विजय नहीं मानता।
- जड़ता तथा आदमी की हार संबंधी निष्कर्ष गद्यांश में स्पष्ट दिए गए हैं।

चरण 1: तीनों कथनों को पाठ से जाँचें मन में नकार द्वारा लोभ जीतने वाला कथन I गलत है। लेखक कहता है कि यह लोभ की जीत और आदमी की हार है। मन को ठाठ देकर बंद रखने को वह जड़ता कहता है, इसलिए बलपूर्वक बंदिश को जड़ता मानने वाला कथन II सही है।

चरण 2: संयोजन और विकल्प जाँचें इसी बंदिश को आदमी की हार बताने से कथन III भी सही सिद्ध होता है। अतः II और III का संयोजन लेना होगा। (A) केवल गलत कथन I देता है। (B) सही कथन III को छोड़ देता है। (D) गलत कथन I को भी सही मान लेता है। केवल (C) दोनों सही कथन देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन II और III सही हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन-संयोजन में हर कथन अलग जाँचें और विकल्प में सभी सही कथनों की उपस्थिति देखें।

6(i). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर लिखिए कि यशोधर बाबू छुट्टी के समय अपने मातहतों से हँसी-मजाक क्यों करते थे ?

[1 अंक]

(A) आने वाले दिन में उनसे अपना काम करवाने के लिए

(B) उनकी नज़रों में अपने-आपको उनका हितैषी सिद्ध करने के लिए

(C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

(D) दफ़्तर के काम की दिन-भर की थकावट मिटाने के लिए

सही उत्तर: (C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के व्यवहार का उद्देश्य कहानी के उसी प्रसंग से निर्धारित होता है।
- दफ़्तर के औपचारिक व्यवहार और छुट्टी के समय की आत्मीयता का संबंध समझना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग स्पष्ट करें यशोधर बाबू कार्यालय में कामकाज के दौरान मातहतों से शुष्क और औपचारिक व्यवहार करते थे। छुट्टी के समय उनके साथ हँसी-मजाक करके वे दिन भर के इसी रूखेपन का निराकरण करते थे। इससे उनके व्यवहार में कुछ सहजता आ जाती थी।

चरण 2: अन्य उद्देश्यों से भेद करें (C) दिन भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कहकर प्रसंग का सही उद्देश्य बताता है। (A) अगले दिन काम करवाने की स्वार्थपूर्ण मंशा जोड़ता है। (B) हितैषी सिद्ध करने का प्रदर्शन बताता है। (D) केवल काम की थकावट मिटाने पर बल देता है। ये उद्देश्य कहानी में इस व्यवहार की बताई गई वजह नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष वे दिन भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए हँसी-मजाक करते थे। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: व्यवहार का कारण पूछने पर दफ़्तर में दिन भर के रूखेपन और छुट्टी की सहजता का संबंध देखें।

6(ii). "बड़े बाऊ, आपकी अपनी चूनेदानी का क्या हाल है ?" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'चूनेदानी' से किस चट्ठा की ओर संकेत किया है ? [1 अंक]

(A) चूना रखने की डिब्बी

(B) घड़ी रखने की डिब्बी

(C) घड़ी

(D) पैन

सही उत्तर: (C) घड़ी

हल:

अवधारणा:

- कहानी में मजाक या व्यंग्य से प्रयुक्त शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निकलता है।
- चट्ठा का संबोधन यशोधर बाबू की पुरानी घड़ी की ओर संकेत करता है।

चरण 1: संवाद का संदर्भ पहचानें चट्ठा यशोधर बाबू से उनकी पुरानी घड़ी के बारे में हँसी-मजाक करता है। उसकी बनावट और पुरानेपन के कारण वह उसे चूनेदानी कहकर संबोधित करता है। इसलिए यहाँ चूनेदानी का शब्दकोशीय अर्थ लेने से संवाद का आशय नहीं खुलता।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (C) घड़ी को सीधे पहचानता है, जो इस संवाद का संकेत है। (A) चूना रखने की वास्तविक डिब्बी बताता है और मजाक के संदर्भ को छोड़ देता है। (B) घड़ी रखने की डिब्बी कहता है, जबकि संकेत घड़ी की ओर है। (D) पैन का इस संवाद के आशय से संबंध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष चूनेदानी से यशोधर बाबू की घड़ी की ओर संकेत है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य में प्रयुक्त वस्तु-नाम का शाब्दिक अर्थ चुनने से पहले बातचीत का संदर्भ पहचानें।

6(iii). "जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।" यशोधर बाबू द्वारा अपने बच्चों से यह बात किस दृष्टि से कही जाती होगी ? [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनके भाग्य की सराहना करने के लिए

(C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

(D) मित्रों की नज़रों में ऊँचा उठने के लिए

सही उत्तर: (C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पिता का संरक्षण और बच्चों का सनाथ होना
- यशोधर बाबू का बचपन अभाव और माता-पिता के संरक्षण की कमी से जुड़ा है। अपने बच्चों को पिता का सहारा प्राप्त देखकर वे उनके सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान कथन में पिता के रहते सुख से रहने की सुविधा पर ध्यान है। वे अपने बच्चों की उस स्थिति को देखते हैं जिसमें पिता उनकी आवश्यकताओं और जिम्मेदारियों का भार उठाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का व्यंग्य इस कथन का प्रमुख भाव नहीं है। (B) में सामान्य भाग्य-प्रशंसा है, जबकि यहाँ पिता के संरक्षण का विशिष्ट भाव है। (D) में मित्रों के सामने प्रतिष्ठा का उद्देश्य प्रसंग से असंगत है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए।

त्वरित सुझाव: कथन का भाव पहचानते समय यशोधर बाबू के अपने अभावपूर्ण बचपन को बच्चों के सुरक्षित वर्तमान से जोड़ें।

6(iv). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पुत्र से गाऊन लेते समय यशोधर बाबू के हृदय को कौन-सी बात बेध गयी ? [1 अंक]

(A) पुत्र द्वारा गाऊन की कीमत बताना

(B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

(C) पुत्र द्वारा उनके पुलोवर का फटा हुआ कहना

(D) गाऊन के नीचे पजामा-कुर्ता पहनने को कहना

सही उत्तर: (B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

हल:

अवधारणा:

- उपहार में छिपा उपयोगितावादी व्यवहार
- गाऊन के उपहार का प्रसंग पिता और पुत्र के संबंध में आत्मीयता तथा अपेक्षा के अंतर को उजागर करता है। यशोधर बाबू को उपहार के पीछे दूध लाने का काम बने रहने की बात चुभती है।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान पुत्र गाऊन पहनकर सुबह दूध लेने जाने की बात कहता है। पिता को लगता है कि उनकी सुविधा की चिंता के साथ भी उनसे वही दैनिक काम कराते रहने की अपेक्षा जुड़ी हुई है। यही बात उनके हृदय को बेधती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में कीमत का उल्लेख निर्णायक चोट नहीं है। (C) में पुराने पुलोवर का फटा होना और (D) में नीचे पजामा-कुर्ता पहनना उस भावनात्मक आघात का कारण नहीं हैं जिसे प्रश्न पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना।

त्वरित सुझाव: उपहार वाले प्रसंग में वस्तु की कीमत के बजाय पिता को सौंपे गए घरेलू काम से जुड़ी टिप्पणी पर ध्यान दें।

6(ix). 'महाकुंड का पानी रिस न सके और बाहर का अशुद्ध पानी कुंड में न आए', इसके लिए मुअनजो-दड़ो में क्या व्यवस्था की गई थी ? [1 अंक]

(A) कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए कुएँ की व्यवस्था की गई।

(B) कुंड के चारों तरफ पक्के कक्षों की व्यवस्था की गई।

(C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

(D) कुंड के पास पक्की और ईंटों से ढकी नालियों की व्यवस्था की गई।

सही उत्तर: (C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

हल:

अवधारणा:

- महाकुंड का जलरोधी निर्माण
- महाकुंड की बनावट में स्वच्छता और जल को सुरक्षित रखने की विशेष सावधानी थी। प्रश्न पानी के रिसाव तथा बाहर के अशुद्ध पानी के प्रवेश को रोकने के निर्माण संबंधी उपाय पर केंद्रित है।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई थी। इस सघन चिनाई का संबंध कुंड को जलरोधी बनाने से है, जिससे भीतर का पानी बाहर न रिसे और बाहरी अशुद्ध पानी भीतर न पहुँचे।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का कुआँ जल की आपूर्ति से संबंधित है। (B) के पक्के कक्ष आसपास की संरचना हैं। (D) की ढकी नालियाँ जलनिकासी से जुड़ी हैं। ये व्यवस्थाएँ तल और दीवारों को जलरोधी बनाने वाले उपाय का स्थान नहीं लेतीं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

त्वरित सुझाव: जल की आपूर्ति, निकासी और रिसाव-रोध में अंतर करें; यहाँ दीवार तथा तल की चिनाई निर्णायक संकेत है।

6(v). लेखक का पिता दत्ता जी राव के यहाँ से बुलावा आने की बात सुनकर तुरंत क्यों चला गया ? [1 अंक]

(A) भयभीत होकर

(B) घबराहट में

(C) सम्मान समझकर

(D) ललचाकर

सही उत्तर: (C) सम्मान समझकर

हल:

अवधारणा:

- दत्ता जी राव की सामाजिक प्रतिष्ठा
- दत्ता जी राव गाँव के प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति थे। लेखक के पिता के लिए उनके यहाँ से बुलावा आना अपने महत्त्व और सम्मान का संकेत था।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान बुलावे की सूचना पर पिता तुरंत चले जाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इतने सम्मानित व्यक्ति ने उन्हें याद किया है। इस प्रतिक्रिया में अपने प्रति मिलने वाले आदर की अनुभूति मुख्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का भय और (B) की घबराहट उनके तत्काल जाने का पाठानुकूल कारण नहीं हैं। (D) का लालच भी इस बुलावे की प्रतिक्रिया को सही नहीं समझाता। कथानक में दत्ता जी राव की प्रतिष्ठा से प्राप्त सम्मान का भाव निर्णायक है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: सम्मान समझकर।

त्वरित सुझाव: किसी पात्र के बुलावे पर प्रतिक्रिया समझने के लिए बुलाने वाले व्यक्ति की गाँव में प्रतिष्ठा और संबंध को देखें।

6(vi). "दत्ता जी राव ने दादा की खूब हजामत बनाई।" 'जूझ' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'हजामत बनाई' का क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) खूब खातिरदारी करना

(B) दाढ़ी-मूँछ को साफ करना

(C) मारपीट करना

(D) खरी-खोटी सुनाना

सही उत्तर: (D) खरी-खोटी सुनाना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का प्रसंगानुकूल अर्थ
- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के शाब्दिक अर्थ से अलग हो सकता है। यहाँ हजामत बनाने का प्रयोग दत्ता जी राव द्वारा लेखक के पिता को कड़ी फटकार लगाने के संदर्भ में हुआ है।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान दत्ता जी राव पिता के व्यवहार की आलोचना करते हैं और उन्हें खरी-खोटी सुनाते हैं। इसलिए इस प्रसंग में हजामत बनाने का आशय कठोर शब्दों में डाँटना अथवा अच्छी तरह खबर लेना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) की खातिरदारी अर्थ के विपरीत है। (B) में दाढ़ी-मूँछ साफ करना शाब्दिक अर्थ है, जो इस प्रसंग में लागू नहीं होता। (C) की मारपीट शारीरिक हिंसा है; यहाँ शब्दों द्वारा फटकार का भाव व्यक्त हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: खरी-खोटी सुनाना।

त्वरित सुझाव: मुहावरे को पात्रों के संवाद और प्रसंग में रखकर पढ़ें; शाब्दिक क्रिया के बजाय व्यक्त भाव के आधार पर विकल्प चुनें।

6(vii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

I. आनंदा के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे।

II. सौंदलगेकर जी लेखक को गणित पढ़ाते थे।

III. लेखक को कक्षा में बसंत पाटिल का साथ मिलता है।

ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) केवल I

(D) केवल III

सही उत्तर: (A) I और III

हल:

अवधारणा:

- पात्रों और घटनाओं का तथ्यबोध
- कथनों की जाँच में पिता के खेती संबंधी काम, शिक्षक के विषय और लेखक के सहपाठी को अलग-अलग पहचानना आवश्यक है। सही विकल्प सभी सत्य कथनों का पूरा समूह होना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान कथन I सही है: आनंदा के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे। कथन III भी सही है: कक्षा में लेखक को बसंत पाटिल का साथ और सहयोग मिलता है। दोनों बातें लेखक के जीवन के अलग प्रसंगों से जुड़ी हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कथन II गलत है, क्योंकि सौंदलगेकर जी लेखक को मराठी पढ़ाते थे और कविता के प्रति प्रेरित करते थे, गणित नहीं। इसलिए (B) में गलत कथन शामिल है; (C) तथा (D) एक-एक सही कथन छोड़ देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है: I और III।

त्वरित सुझाव: संयुक्त कथनों में पहले शिक्षक का विषय जैसे स्पष्ट तथ्य जाँचें, फिर शेष सत्य कथनों को पूरा समेटने वाला विकल्प चुनें।

6(viii). मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को अनायास ही कौन-सा गाँव याद आ गया ? [1 अंक]

(A) चंडीगढ़

(B) राजगढ़

(C) कुलधरा

(D) मरुधरा

सही उत्तर: (C) कुलधरा

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक नगर और स्मृति का संबंध
- लेखक मुअनजो-दड़ो की गलियों और घरों में घूमते हुए वर्तमान अनुभव को पहले देखे हुए स्थान की स्मृति से जोड़ता है। प्रश्न उसी अनायास उभरी ग्राम-स्मृति की पहचान करता है।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान इन घरों में टहलते हुए लेखक को राजस्थान का उजड़ा गाँव कुलधरा याद आता है। निर्जन घरों और पुरानी बस्ती की अनुभूति दोनों स्थानों के बीच स्मृति का संबंध बनाती है। यह तुलना पाठ में लेखक के व्यक्तिगत अनुभव के रूप में आती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) चंडीगढ़, (B) राजगढ़ और (D) मरुधरा उस स्मरण किए गए गाँव का नाम नहीं हैं। प्रश्न किसी

सामान्य समानता वाले स्थान का अनुमान लगाने के लिए नहीं, पाठ में आए निश्चित नाम को पहचानने के लिए है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: कुलधरा।

त्वरित सुझाव: स्थान-आधारित प्रश्न में लेखक की स्मृति में आए वास्तविक नाम को चुनें; केवल सुनने में समान नामों से भ्रमित न हों।

6(x). 'सिंधु घाटी मैदान की संस्कृति थी, पर पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था।' क्यों ? [1 अंक]

(A) सिंधु घाटी सभ्यता की सुरक्षा के कारण

(B) सिंधु नदी के किनारे बसा होने के कारण

(C) सिंधु घाटी सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल को स्थापित करने के लिए

(D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

सही उत्तर: (D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- नगर नियोजन में बाढ़ से सुरक्षा
- सिंधु घाटी की सभ्यता मैदानों में विकसित हुई थी। नदी के निकट रहने वाले लोगों को बाढ़ के खतरे का सामना करना पड़ता था, इसलिए बसावट की ऊँचाई व्यावहारिक सुरक्षा से जुड़ी थी।

चरण 1: प्रसंग और सही अर्थ की पहचान मुअनजो-दड़ो को छोटे-मोटे टीलों पर बसाने का उद्देश्य बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचना था। ऊँचे स्थान पर बसने से नदी का बढ़ा हुआ जल सीधे आवासीय भागों तक पहुँचने का खतरा कम होता था।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में सुरक्षा का सामान्य उल्लेख है, विशिष्ट बाढ़ का कारण स्पष्ट नहीं है। (B) नदी के किनारे होना बताता है पर ऊँचाई का उद्देश्य नहीं। (C) में केवल वास्तुकौशल प्रदर्शित करने की बात है, जो इस व्यवस्था का कारण नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए।

त्वरित सुझाव: मैदान में ऊँची बसावट का कारण पूछे जाने पर नदी की बाढ़ और उससे बचाव के व्यावहारिक संबंध को पहचानें।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : वर्तमान तकनीकी युग और हस्तशिल्प कलाएँ [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का नया दृष्टिकोण, मौलिक कल्पना और जीवन से जुड़े उदाहरण आवश्यक हैं। यहाँ तकनीक और हस्तशिल्प के संबंध को समझना है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आकर्षक शीर्षक, विषय का संक्षिप्त परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विकास और सार्थक समापन होना चाहिए।

चरण 1: लेख की रूपरेखा निर्धारित करना शीर्षक में हाथ की कला और तकनीक का संबंध सामने आएगा। आरंभ मशीनों के युग में हस्तनिर्मित वस्तुओं के आकर्षण से होगा। मध्य भाग में कारीगर की मेहनत, सांस्कृतिक पहचान तथा इंटरनेट से मिलने वाले बाजार की चर्चा की जाएगी। अंतिम वाक्य में तकनीक के विवेकपूर्ण प्रयोग का संदेश रखा जाएगा।

चरण 2: विचारों का संतुलन बनाना मशीनें उत्पादन तेज करती हैं, किंतु हस्तशिल्प की विशिष्टता कलाकार के अनुभव और व्यक्तिगत स्पर्श से आती है। इसलिए तकनीक को कला का सहयोगी दिखाना उचित है। ऑनलाइन बिक्री, डिजिटल भुगतान और प्रशिक्षण जैसे

ठोस उदाहरण विषय को स्पष्ट करेंगे। लेख में केवल समस्याओं की सूची देने के स्थान पर उनके व्यावहारिक समाधान भी सामने आएँगे।

चरण 3: प्रस्तुत करने योग्य रचनात्मक लेख **हाथों की कला, तकनीक का साथ**

मशीनों की तेज आवाज़ के बीच कारीगर की उँगलियाँ आज भी अपनी कहानी कहती हैं। मिट्टी का दीपक, कढ़ाईदार कपड़ा और बाँस की टोकरी केवल वस्तुएँ नहीं, हमारी संस्कृति की पहचान हैं। तकनीकी युग में सस्ती मशीनी वस्तुओं ने हस्तशिल्प के सामने कठिन चुनौती रखी है। फिर भी तकनीक उसकी सहयोगी बन सकती है। इंटरनेट के माध्यम से गाँव का कलाकार अपनी कला दूर बैठे ग्राहकों तक पहुँचा सकता है। डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन प्रशिक्षण उसके काम को सरल बनाते हैं। आवश्यकता है कि कारीगर को उचित मूल्य, सम्मान और नए अवसर मिलें। विद्यालयों में हस्तकला का अभ्यास भी बढ़ना चाहिए। तकनीक जब हाथों के हुनर का साथ देगी, तब परंपरा नए रंगों में मुसकराएगी और कलाकार का घर भी रोशन होगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख तकनीक और हस्तशिल्प के बीच सहयोग की संभावनाएँ स्पष्ट करता है। सांस्कृतिक पहचान, कारीगर की आजीविका और आधुनिक बाजार को जोड़ते हुए इसका समापन आशापूर्ण संदेश के साथ होता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय के दो मुख्य पक्ष चुनें, फिर एक ठोस उदाहरण और समाधान जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख लिखें।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

आपसी रिश्तों में बढ़ती स्वार्थपरकता [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह विषय मानवीय संबंधों में अपने लाभ को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति और उसके प्रभावों पर संवेदनशील विचार प्रस्तुत करने की माँग करता है।
- रचनात्मक लेख में छोटा जीवनचित्र, आत्मीय भाषा और समाधानपरक समापन प्रभावी होते हैं। शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों में एक केंद्रीय विचार विकसित करना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रारूप की योजना शीर्षक संबंधों की आत्मीयता और स्वार्थ के बीच तनाव को उभारेगा। आरंभ परिचित अनुभव से होगा कि लोग कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर ही संपर्क करते हैं। आगे विश्वास और संवेदना पर पड़ने वाले प्रभाव बताए जाएँगे। अंत में समय देने, सुनने और बिना लाभ की अपेक्षा के सहयोग करने का संदेश होगा।

चरण 2: सामग्री को संवेदनशील बनाना हर संबंध को स्वार्थपूर्ण बताना अतिशयोक्ति होगी। लेख में बढ़ती प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए निस्वार्थ संबंधों की संभावना बनाए रखनी है। धन या सफलता के आधार पर संबंधों का मूल्यांकन, व्यस्तता और लाभ की अपेक्षा जैसे कारणों को संकेत रूप में रखा जाएगा। सरल उदाहरण और सहज भाषा विचार को उपदेश की जगह आत्मचिंतन का रूप देंगे।

चरण 3: प्रस्तुत करने योग्य रचनात्मक लेख **रिश्तों में लौटे अपनापन**

फोन की घंटी बजती है और मन खुश हो जाता है। पर जब बातचीत केवल किसी काम की माँग पर समाप्त होती है, तो भीतर कुछ टूटता है। आज अनेक रिश्तों में अपनत्व की जगह लाभ की गणना बढ़ रही है। कौन कितना उपयोगी है, इसी आधार पर निकटता तय होने लगती है। व्यस्त जीवन और सफलता की अंधी दौड़ ने संवेदना को कमजोर किया है। परिणामस्वरूप साथ रहते हुए भी लोग अकेले पड़ जाते हैं। संबंध सुविधाओं का सौदा नहीं, विश्वास का सहारा हैं। किसी की बात ध्यान से सुनना, संकट में साथ देना और बिना अपेक्षा सहायता करना उन्हें मजबूत बनाता है। हमें अपने व्यवहार से शुरुआत करनी होगी। रिश्तों को समय और स्नेह मिलेगा, तभी स्वार्थ की दीवारें धीरे-धीरे गिरेंगी।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में स्वार्थपरक व्यवहार से उत्पन्न दूरी और अकेलेपन को पहचानते हुए विश्वास, संवाद तथा निस्वार्थ सहयोग का महत्त्व स्पष्ट किया गया है। इसका संदेश अपने व्यवहार से रिश्तों में आत्मीयता लौटाने का है।

त्वरित सुझाव: रिश्तों जैसे भावनात्मक विषय पर छोटा जीवनचित्र चुनें और उसी से समस्या, प्रभाव तथा समाधान को स्वाभाविक ढंग से जोड़ें।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय की स्पष्ट समझ, विचारों का क्रम और प्रभावशाली भाषा आवश्यक हैं। यहाँ भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सहयोग, विज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों से जोड़ना है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में शीर्षक के बाद संक्षिप्त भूमिका, विषय का विस्तार और सार्थक निष्कर्ष रखें। विषय की प्रशंसा करते समय अतिशयोक्ति और अप्रमाणित आँकड़ों से बचें।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की योजना पहले विषयानुकूल शीर्षक दें। भूमिका में विश्व में भारत की बदलती पहचान बताएँ। मध्य भाग में वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, सांस्कृतिक संपर्क, लोकतांत्रिक परंपरा और आपदा के समय सहयोग जैसे आधार जोड़ें। अंत में स्पष्ट करें कि स्थायी प्रतिष्ठा के लिए आंतरिक प्रगति भी आवश्यक है। विचारों को छोटे और परस्पर जुड़े वाक्यों में रखें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं चाहिए।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख **विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा**

आज विश्व के मंच पर भारत की आवाज़ अधिक ध्यान से सुनी जा रही है। इसकी पहचान विशाल जनसंख्या तक सीमित नहीं है; विज्ञान, तकनीक, लोकतंत्र और संस्कृति भी इसके आधार हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान की उपलब्धियाँ भारतीय प्रतिभा का परिचय देती हैं। योग और भारतीय साहित्य विभिन्न देशों के लोगों को जोड़ते हैं। संकट के समय दवाएँ, सहायता और राहत पहुँचाने की हमारी परंपरा विश्वास बढ़ाती है। भारत अंतरराष्ट्रीय संवाद में शांति, सहयोग और विकासशील देशों की आवश्यकताओं को स्थान देने की बात करता है। किंतु वास्तविक प्रतिष्ठा केवल प्रशंसा से नहीं बनती। शिक्षा, समानता और पर्यावरण की रक्षा पर निरंतर कार्य करना होगा। जब देश भीतर से सशक्त और संवेदनशील होगा, तभी विश्व जनमत में उसका प्रभाव स्थायी बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा के आधार बताता है और उसे आंतरिक विकास तथा जिम्मेदार वैश्विक व्यवहार से जोड़कर विषय का संतुलित समापन करता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय में दो या तीन ठोस आधार चुनें और अंतिम वाक्य में भविष्य की जिम्मेदारी जोड़ें; केवल प्रशंसा के विशेषणों से लेख न भरें।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
शीतलता बरसाता चाँद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति संबंधी रचनात्मक लेख में दृश्य, अनुभूति और कल्पना का मेल होता है। चाँद की शीतलता को चाँदनी, शांत रात और मन को मिलने वाले विश्राम के बिंबों से व्यक्त किया जा सकता है।
- लगभग 120 शब्दों में शीर्षक, दृश्यात्मक आरंभ, भावपूर्ण विस्तार और सार्थक समापन दें। भाषा सरल रहे; अलंकार अनुभूति को स्पष्ट करें और विचारों के स्थान पर केवल सजावट न बनें।

चरण 1: प्रारूप और भावों की योजना शीर्षक के बाद चाँदनी रात का छोटा दृश्य प्रस्तुत करें। फिर पेड़ों, आँगन या जल पर पड़ती चाँदनी का वर्णन करें और बाहरी शांति को मन की शांति से जोड़ें। समापन में चाँद से मिलने वाला कोई जीवन संदेश रखा जा सकता है। यहाँ शीतलता एक साहित्यिक अनुभूति है; लेख को वैज्ञानिक विवरण बनाने की आवश्यकता नहीं है। वर्णन के बीच भावों का स्वाभाविक प्रवाह बनाए रखें। एक ही बिंब को बार-बार दोहराने के स्थान पर दृश्य से अनुभूति और अनुभूति से संदेश की ओर बढ़ें।

चरण 2: पूर्ण नमूना लेख **शीतलता बरसाता चाँद**

दिन भर की धूप और भागदौड़ के बाद जब चाँद आकाश में उभरता है, तो धरती जैसे राहत की साँस लेती है। उसकी दूधिया चाँदनी आँगन,

पेड़ों और छतों पर चुपचाप बिछ जाती है। हवा में हिलते पत्ते उस उजाले से बातें करते लगते हैं। मैं छत पर बैठकर उसे देखता हूँ तो मन की बेचैनी धीरे-धीरे शांत होने लगती है। चाँद कोई उपदेश नहीं देता, फिर भी उसकी मौन उपस्थिति बहुत कुछ सिखाती है। अँधेरे के बीच चमकना और बिना भेदभाव सबके हिस्से उजाला बाँटना कितना सुंदर गुण है! कभी बादल उसे ढक लेते हैं, पर उसका प्रकाश फिर लौट आता है। वह विश्वास जगाता है कि कठिन समय में भी आशा बची रहती है। चाँद सचमुच आँखों और मन, दोनों को शीतलता देता है।

चरण 3: निष्कर्ष नमूना लेख चाँदनी के दृश्य से आरंभ होकर मानसिक शांति और आशा की अनुभूति तक पहुँचता है। इस प्रकार शीतलता का बाहरी और आंतरिक, दोनों रूपों में चित्रण होता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति पर लेख लिखते समय पहले एक दिखाई देने वाला दृश्य बनाएँ, फिर उससे जुड़ी अनुभूति बताएँ और अंत में छोटा जीवन संदेश दें।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के संबंध में किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में मौलिक चिंतन और कल्पना के साथ विषय की स्पष्ट समझ आवश्यक है। लेखक निजी अनुभवों और आसपास के जीवन से सामग्री जुटाता है।
- प्रभावी रचना में विचारों की क्रमबद्धता, विषय से संबद्धता और सहज भाषा का संतुलन रहता है। केवल कठिन शब्दों का प्रयोग रचनात्मकता का प्रमाण नहीं है।

चरण 1: विषय को समझकर सामग्री चुनना पहले विषय के अर्थ और उसकी संभावित दिशाओं पर विचार करना चाहिए। उससे जुड़े अनुभवों, घटनाओं और विचारों की संक्षिप्त रूपरेखा बनाई जाती है। सामग्री मौलिक और प्रासंगिक हो; याद की हुई किसी रचना को जबरन विषय से जोड़ना उचित नहीं। प्रश्न में लेखन की सावधानियाँ पूछी गई हैं, इसलिए उत्तर में इनका स्पष्ट उल्लेख आवश्यक है।

चरण 2: प्रस्तुति की योजना बनाना चुने हुए विचारों को आरंभ, विस्तार और समापन के क्रम में रखें। आरंभ पाठक की जिज्ञासा जगाए, मध्य में विचार स्पष्ट हों और अंत विषय को सार्थक पूर्णता दे। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और व्याकरणसम्मत रहे। अनावश्यक विस्तार तथा एक ही बात की पुनरावृत्ति से बचें।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर नए अथवा अप्रत्याशित विषय पर लिखते समय विषय को अच्छी तरह समझकर उससे जुड़े अनुभवों और विचारों की रूपरेखा बनानी चाहिए। लेखन मौलिक, रोचक और विषयानुकूल हो। कल्पना का उपयोग करते हुए विचारों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करें। भाषा सरल, प्रभावपूर्ण तथा व्याकरणसम्मत हो। आकर्षक आरंभ, संगत विस्तार और सार्थक समापन रखें। अनावश्यक विस्तार और दोहराव से बचें।

चरण 4: निष्कर्ष विषय की समझ, मौलिकता, क्रमबद्ध विचार और सहज भाषा अप्रत्याशित विषय पर प्रभावी लेखन के प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े तीन उपयोगी विचार लिखें, फिर उन्हें आरंभ, विस्तार और समापन के क्रम में व्यवस्थित करें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

रेडियो नाटक की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम की रचना है। इसके कथानक, पात्र और वातावरण का बोध आवाज़, संवाद, संगीत तथा ध्वनि प्रभावों से होता है।
- रेडियो में मंच के दृश्य उपलब्ध नहीं होते; इसलिए श्रोता सुनाई देने वाले संकेतों से अपने मन में दृश्य बनाता है। उसकी कल्पनाशील भागीदारी इस माध्यम की शक्ति है।

चरण 1: प्रासंगिकता का आधार समझना रेडियो नाटक की उपयोगिता को उसकी व्यापक पहुँच और सुनकर आनंद लेने की सुविधा से समझना चाहिए। इसे समझने के लिए पढ़ना या मंच को देखना आवश्यक नहीं है। यह मनोरंजन के साथ सामाजिक सरोकारों को सामने ला सकता है। ध्वनि के सहारे श्रोता की कल्पना सक्रिय करना इसे एक स्वतंत्र कलात्मक रूप बनाता है।

चरण 2: श्रव्य प्रस्तुति की विशेषताएँ पहचानना पात्रों की आवाज़ और बोलने का ढंग उनकी पहचान बनाते हैं। संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक और स्पष्ट हों, ताकि पात्रों की स्थिति तथा कथा का विकास समझ आए। संगीत वातावरण और भावों को उभारता है। कदमों, वर्षा या दरवाज़े की आवाज़ जैसे ध्वनि संकेत दृश्यगत क्रिया का बोध कराते हैं। अनावश्यक वर्णन संवादों की गति को बाधित करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक व्यापक पहुँच वाला श्रव्य माध्यम है। यह मनोरंजन के साथ सामाजिक चेतना जगाता है और श्रोता की कल्पना को सक्रिय करता है। इसमें दृश्य न होने से पात्रों तथा घटनाओं का परिचय संवाद, स्वर, संगीत और ध्वनि प्रभावों से मिलता है। इसके संवाद छोटे, सहज और स्पष्ट होते हैं। आवाज़ों की भिन्नता पात्रों की पहचान और वातावरण निर्माण में सहायक होती है।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक की प्रासंगिकता उसकी पहुँच और कल्पना जगाने की क्षमता में है; उसकी विशिष्टता ध्वनि से नाटकीय संसार रचने में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहुँच और सामाजिक उपयोग के साथ संवाद, स्वर, संगीत तथा ध्वनि प्रभावों की भूमिका अवश्य जोड़ें।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

कहानी और नाटक में क्या अंतर है ? दोनों की किन्हीं तीन मुख्य विविधताओं को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी कथात्मक साहित्यिक विधा है, जबकि नाटक मुख्यत: अभिनय और मंचीय प्रस्तुति के लिए लिखा जाता है। दोनों में पात्र और घटनाएँ होती हैं, किंतु प्रस्तुति का ढंग भिन्न है।
- तुलनात्मक उत्तर में समान आधार पर दोनों विधाओं को साथ रखकर अंतर स्पष्ट करना चाहिए। यहाँ प्रस्तुति, अभिव्यक्ति और समय-स्थान तीन उपयोगी आधार हैं।

चरण 1: प्रस्तुति और अभिव्यक्ति का अंतर कहानी में कथाकार घटनाओं, परिवेश और पात्रों की मन:स्थिति का वर्णन कर सकता है। पाठक लिखित वर्णन से घटनाओं की कल्पना करता है। नाटक में घटना पात्रों के संवाद और अभिनय से दर्शक के सामने घटित होती है। मंच निर्देश प्रस्तुति में सहायता देते हैं। इसलिए कहानी में कथावाचन का और नाटक में क्रिया तथा संवाद का प्रमुख स्थान है।

चरण 2: समय और स्थान की सीमा समझना कहानीकार कुछ वाक्यों में वर्षों की घटनाएँ बता सकता है और अनेक स्थानों पर कथा ले जा सकता है। मंचीय नाटक में प्रस्तुति की अवधि तथा दृश्य परिवर्तन की व्यावहारिक सीमाएँ ध्यान में रखनी होती हैं। यह कहना उचित नहीं होगा कि नाटक में स्थान या समय कभी बदल ही नहीं सकता; अंतर उनकी प्रस्तुति की सुविधा और सीमा का है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी और नाटक में तीन मुख्य अंतर हैं। पहला, कहानी पढ़ी जाती है, जबकि नाटक अभिनय के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत होता है। दूसरा, कहानी में कथाकार वर्णन द्वारा घटनाएँ और मनोभाव बताता है; नाटक में ये संवाद तथा क्रिया

से व्यक्त होते हैं। तीसरा, कहानी में समय और स्थान का विस्तार सहज है, जबकि नाटक को मंचीय सीमाओं का ध्यान रखना पड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुति का माध्यम, वर्णन अथवा संवाद की प्रधानता तथा समय-स्थान की स्वतंत्रता दोनों विधाओं के तीन प्रमुख भेद हैं।

त्वरित सुझाव: तीन अंतर लिखते समय हर बिंदु में कहानी और नाटक दोनों का उल्लेख करें, ताकि तुलना पूरी और स्पष्ट रहे।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

समाचार लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण शैली कौन-सी है ? इसके सभी चरणों की जानकारी देते हुए इस शैली को स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तथ्य उनके घटते हुए महत्त्व के क्रम में प्रस्तुत किए जाते हैं। सबसे आवश्यक सूचना आरंभ में आती है।
- इसके तीन प्रमुख चरण मुखड़ा, बॉडी और समापन हैं। यह साहित्यिक कथा के कौतूहलपूर्ण क्रम से अलग समाचार की प्रमुख बात तत्काल बताती है।

चरण 1: उत्तर की विषयवस्तु निर्धारित करना पहले शैली का नाम लिखना आवश्यक है। फिर मुखड़े में मुख्य घटना और आवश्यक ककारों की जानकारी, बॉडी में विस्तार तथा समापन में कम महत्त्वपूर्ण विवरण का क्रम स्पष्ट करना चाहिए। सारे ककार एक ही वाक्य में ठूँसने के स्थान पर समाचार की सबसे जरूरी जानकारी को प्राथमिकता दी जाती है। समाचार का शीर्षक पाठक का ध्यान खींचता है, किंतु व्याख्या में चरणों का सही क्रम और उनकी भूमिका बताना विशेष रूप से जरूरी है। यहाँ किसी वास्तविक समाचार की रचना अपेक्षित नहीं है; शैली के चरणों की व्याख्या अपेक्षित है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में मॉडल उत्तर समाचार लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसमें सूचनाएँ घटते महत्त्व के क्रम में दी जाती हैं। इसके तीन चरण हैं। मुखड़े या इंट्रो में समाचार का मुख्य तथ्य तथा क्या, कब, कहाँ, कौन आदि आवश्यक ककारों का संक्षिप्त उत्तर आता है। बॉडी में घटना का विस्तृत विवरण, कारण, पृष्ठभूमि और संबंधित कथन प्रस्तुत किए जाते हैं। समापन में अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए जाते हैं। इससे पाठक मुख्य बात तुरंत जान लेता है और नीचे से संपादन करने पर भी समाचार का मूल अर्थ सुरक्षित रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष उल्टा पिरामिड शैली के मुखड़े, बॉडी और समापन में क्रमशः मुख्य सूचना, उसका विस्तार और कम महत्त्वपूर्ण विवरण रखा जाता है।

त्वरित सुझाव: तीन चरणों को याद रखने के लिए मुख्य सूचना, विस्तार और गौण विवरण का घटता क्रम ध्यान में रखें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

"सूचनाओं के त्वरित संप्रेषण में इंटरनेट पत्रकारिता ने क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।" इस कथन के आलोक में इसकी खूबियों और खामियों पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता डिजिटल माध्यम से समाचारों का त्वरित प्रकाशन और प्रसार करती है। इसमें सूचनाओं को लगातार अद्यतन किया जा सकता है।
- माध्यम की गति और व्यापक पहुँच इसकी खूबियाँ हैं, जबकि अपुष्ट सूचनाओं का प्रसार तथा विश्वसनीयता का संकट इसकी प्रमुख खामियाँ हैं।

चरण 1: कथन के अनुरूप संतुलित उत्तर की योजना आरंभ में त्वरित संप्रेषण की विशेषता स्पष्ट करें। फिर व्यापक पहुँच, निरंतर अद्यतन, बहुमाध्यमी प्रस्तुति और पाठकीय सहभागिता जैसी खूबियाँ रखें। इनके साथ तथ्य-जाँच की कमी, अफवाह और डिजिटल पहुँच की असमानता का उल्लेख करके उत्तर संतुलित बनाएँ। केवल तकनीक की प्रशंसा या केवल आलोचना करने से प्रश्न का एक पक्ष छूट जाएगा। प्रकाशन से पहले स्रोत की जाँच जरूरी है। गति और शुद्धता अलग गुण हैं; तेज प्रसार किसी सूचना के सत्य होने की गारंटी नहीं है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में मॉडल उत्तर इंटरनेट पत्रकारिता ने समाचारों को तत्काल और विश्वव्यापी पहुँच दी है। सूचनाएँ लगातार अद्यतन होती हैं तथा पाठ, चित्र, ध्वनि और वीडियो एक साथ मिलते हैं। पाठक प्रतिक्रिया देकर संवाद में भाग ले सकता है और पुराने समाचार भी आसानी से खोज सकता है। किंतु जल्दी प्रकाशित करने की होड़ में अपुष्ट खबरें, अफवाहें और भ्रामक सामग्री फैलती हैं। तथ्य-जाँच तथा संपादकीय नियंत्रण की कमी विश्वसनीयता घटाती है। इंटरनेट की असमान उपलब्धता भी बाधा है। इसलिए इसकी गति के साथ जिम्मेदार संपादन और सत्यापन आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता की त्वरित, व्यापक और संवादपरक पहुँच क्रांतिकारी है; उसकी उपयोगिता बनाए रखने के लिए समाचारों की विश्वसनीयता और तथ्य-जाँच सुनिश्चित करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गति और पहुँच के लाभों के साथ अपुष्ट खबरों का जोखिम अवश्य लिखें, ताकि खूबियाँ और खामियाँ दोनों स्पष्ट हों।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

संपादकीय लेखन क्या है ? इसके विषय में बताते हुए संपादकीय लेखन की किन्हीं तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है; इसमें किसी महत्त्वपूर्ण सामयिक प्रश्न का विवेचन होता है।
- तथ्यपरकता, तार्किक विश्लेषण और जनहित संपादकीय के आधार हैं।

चरण 1: परिभाषा और उद्देश्य समझें समाचार घटना की सूचना देता है, जबकि संपादकीय उस घटना या समस्या का अर्थ, प्रभाव तथा उससे जुड़े प्रश्न स्पष्ट करता है। यह सामान्यतः संपादक मंडल का दृष्टिकोण होता है, इसलिए प्रायः लेखक का व्यक्तिगत नाम नहीं दिया जाता। इसका उद्देश्य पाठकों को विचार के लिए विश्वसनीय आधार देना और जनमत निर्माण में सहायता करना है।

चरण 2: तीन विशेषताओं का चयन करें पहली विशेषता तथ्यपरक और निष्पक्ष विवेचन है: किसी पक्ष की अप्रमाणित बात को सत्य नहीं माना जाता। दूसरी विशेषता तार्किकता है: निष्कर्ष के पीछे तथ्य, कारण और तर्क होने चाहिए। तीसरी विशेषता जनहितपरकता है: समस्या पर विचार करते हुए सामाजिक हित तथा व्यावहारिक समाधान को सामने रखा जाता है। संस्थागत मत होने का अर्थ निराधार पक्षपात नहीं है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर संपादकीय लेखन समाचार-पत्र के संपादक मंडल की ओर से किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर विचार प्रस्तुत करने का लेखन है। इसमें घटना का विश्लेषण करके पत्र का दृष्टिकोण स्पष्ट किया जाता है। इसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं—तथ्यों की शुद्धता तथा निष्पक्ष विवेचन, विचारों की तार्किकता एवं स्पष्ट प्रस्तुति और जनहित की दृष्टि से समस्या पर विचार तथा समाधान का सुझाव। इसकी भाषा संयत और प्रभावपूर्ण होती है। संपादकीय सामान्यतः लेखक के व्यक्तिगत नाम के बिना प्रकाशित होता है।

चरण 4: निष्कर्ष संपादकीय में विश्वसनीय तथ्यों, तर्क और जनहित के आधार पर समाचार-पत्र की विचारपूर्ण राय सामने आती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद तीन विशेषताएँ अलग-अलग स्पष्ट करें और प्रत्येक का अर्थ भी बताएँ।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता में कवि का दुनिया से प्रीतिकलह का संबंध है और उनका जीवन भी विरुद्धों का सामंजस्य है। इस संबंध में आपके क्या विचार हैं ? लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में व्यक्तिगत संवेदना और संसार के प्रति प्रेम साथ-साथ व्यक्त होते हैं।
- प्रीतिकलह में लगाव और विरोध दोनों हैं; विरुद्ध भावों का सह-अस्तित्व कवि के जीवन की विशेषता है।

चरण 1: प्रीतिकलह का आशय समझें कवि संसार के सुख-दुख और मनुष्यों से जुड़ा है, इसलिए दुनिया से उसका संबंध प्रेम का है। फिर भी वह उसकी रूढ़ियों, बंधनों और अपेक्षाओं के अनुसार अपना व्यक्तित्व खोना नहीं चाहता। इसी स्वतंत्रता के कारण संसार से विरोध भी होता है। यह विरोध घृणा से पैदा नहीं होता; प्रेम बना रहते हुए असहमति का होना ही प्रीतिकलह है।

चरण 2: विरोधी भावों के सामंजस्य को पहचानें कवि के भीतर दुख होते हुए भी प्रेम और उल्लास है। रोदन की संवेदना गान बनती है और जीवन का भार उठाते हुए भी वह आत्मीयता सँजोता है। इसलिए दुख और आनंद, बंधन और स्वतंत्रता, लगाव और असहमति परस्पर एक-दूसरे को मिटाते नहीं हैं। कवि इन भावों को साथ लेकर जीता है; यही उसके व्यक्तित्व की जटिलता और कविता की सहजता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि दुनिया से प्रेम करता है, पर उसकी रूढ़ियों और बंधनों को स्वीकार नहीं करता; इसलिए उसका संबंध प्रीतिकलह का है। उसके जीवन में दुख के साथ उल्लास, रोदन के साथ गान और संसार से लगाव के साथ स्वतंत्रता की चाह है। वह संसार का भार उठाते हुए भी प्रेम सँजोता है। इन विरोधी भावों का सह-अस्तित्व ही विरुद्धों का सामंजस्य है।

चरण 4: निष्कर्ष दुनिया से प्रेम करते हुए उसके बंधनों का विरोध करना और दुख में भी प्रेम व गान बचाए रखना कवि के जीवन का सामंजस्य है।

त्वरित सुझाव: प्रीतिकलह के प्रेम और विरोध दोनों पक्ष बताएँ; केवल संसार से असंतोष लिखना अधूरा है।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

फिराक गोरखपुरी वात्सल्य रस के अनूठे चितेरे हैं। रूबाइयों के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वात्सल्य रस का आधार माता का बच्चे के प्रति सहज स्नेह और उसकी बाल-चेष्टाएँ हैं।
- फिराक की रुबाइयों में घरेलू जीवन के दृश्य मातृस्नेह को प्रत्यक्ष और जीवंत बनाते हैं।

चरण 1: माँ और शिशु के आत्मीय दृश्य पहचानें फिराक गोरखपुरी माँ को बच्चे को गोद में लेकर दुलारते और उछालते हुए चित्रित करते हैं। बच्चे की हँसी और माँ की प्रसन्नता दोनों मिलकर वात्सल्य का सहज वातावरण बनाते हैं। बच्चे को नहलाने, बाल सँवारने और कपड़े पहनाने जैसे साधारण कार्य भी माँ के प्रेम और सावधानी की अभिव्यक्ति हैं। यहाँ स्नेह किसी उपदेश के माध्यम से नहीं, व्यवहार में दिखाई देता है।

चरण 2: बाल-मनोविज्ञान और मातृस्नेह जोड़ें चाँद लेने की जिद करने वाले बालक को माँ दर्पण में चाँद दिखाकर बहलाती है। वह बच्चे की इच्छा और कल्पना को समझती है; इसीलिए उसकी जिद पर केवल डाँटने के बजाय प्रेमपूर्वक उपाय करती है। बालक की निश्चल उत्सुकता तथा माँ की समझदारी और ममता का यह मेल कवि को वात्सल्य का अनूठा चितेरा बनाता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फिराक की रुबाइयों में माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध के सजीव चित्र हैं। माँ बच्चे को गोद में उछालकर हँसाती है, नहलाती है और बाल सँवारकर कपड़े पहनाती है। चाँद लेने की जिद पर दर्पण में चाँद दिखाकर उसे बहलाती है। इन घरेलू प्रसंगों में माँ की ममता और बच्चे की निश्छल चेष्टाएँ उभरती हैं। इसलिए फिराक वात्सल्य रस के अनूठे चितेरे हैं।

चरण 4: निष्कर्ष माँ के दुलार, देखभाल और बाल-मन की समझ के चित्र फिराक की रुबाइयों में वात्सल्य को सजीव करते हैं।

त्वरित सुझाव: वात्सल्य की पुष्टि के लिए गोद, स्नान और दर्पण में चाँद दिखाने जैसे ठोस प्रसंग चुनें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर लिखिए कि बात और भाषा एक दूसरे के पूरक हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में बात बन नहीं पाती है, कैसे ? समझाकर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बात आशय है और भाषा उसे दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम है। सफल अभिव्यक्ति में दोनों का सहज सामंजस्य आवश्यक है।
- भाषा की सुंदरता तभी उपयोगी है जब उससे अर्थ स्पष्ट हो। कठिन शब्दों और अनावश्यक बनावट के कारण मूल कथ्य ओझल नहीं होना चाहिए।

चरण 1: कथ्य और माध्यम का संबंध समझिए बात के बिना भाषा निरर्थक शब्दसमूह रह जाती है और भाषा के बिना बात व्यक्त नहीं हो पाती। इसलिए दोनों पूरक हैं। कवि के सामने एक सीधी बात थी, जिसे सहज शब्दों में कहा जा सकता था; किंतु वह उसे अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को घुमाता रहा।

चरण 2: कविता के प्रसंग से परिणाम समझिए भाषा को उलटने-पलटने और अधिक सजाने के प्रयत्न में बात उलझती चली गई। कवि ने बात को साधने के स्थान पर शब्दों की बनावट पर बल दिया। पेंच को अनावश्यक कसने पर उसकी चूड़ी बिगड़ने की तरह अभिव्यक्ति की सहजता नष्ट हो गई। इससे स्पष्ट होता है कि कथ्य के अनुरूप भाषा आवश्यक है; केवल शब्द-कौशल बात को सफल नहीं बनाता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बात विचार या भाव है और भाषा उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम; इसलिए दोनों पूरक हैं। किंतु जब कवि सहज बात को प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को अनावश्यक घुमाता और सजाता है, तो बात उलझ जाती है। भाषा का पेंच अधिक कसने से अर्थ की सहजता नष्ट होती है। फलतः शब्दों का चमत्कार रह जाता है, बात स्पष्ट नहीं हो पाती।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का आशय है कि भाषा कथ्य के अनुकूल सहज हो; अनावश्यक शब्द-कौशल मूल बात को बिगाड़ देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बात और भाषा की पूरकता, फिर भाषा के अनावश्यक पेंच से अर्थ बिगड़ने का क्रम लिखिए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से ली गई पंक्ति – 'हम समर्थ शक्तिमान एक दुर्बल को लाएँगे' से वर्तमान टी.वी. पत्रकारिता के किस रूप का पता चलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता मीडिया की संवेदनहीनता और पीड़ित व्यक्ति की विवशता के प्रदर्शन पर व्यंग्य करती है।
- समर्थ और दुर्बल का विरोध पत्रकार तथा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के बीच शक्ति के असंतुलन को प्रकट करता है।

चरण 1: शब्दों में छिपी सत्ता पहचानिए अपने को समर्थ और शक्तिमान बताने वाले कार्यक्रम-निर्माता दुर्बल व्यक्ति को अपनी योजना के अनुसार प्रस्तुत करना चाहते हैं। यहाँ समानता और आत्मीय संवाद का भाव नहीं, बल्कि दूसरे की विवशता पर अधिकार जताने की मानसिकता है।

चरण 2: पत्रकारिता का रूप स्पष्ट कीजिए कविता में पीड़ा को समझने के बजाय उसे दर्शकों के लिए करुण दृश्य बनाने की कोशिश है। कैमरा संचालक अपनी सुविधा से प्रश्न पूछते हैं और पीड़ित से भावुक प्रतिक्रिया चाहते हैं। यह व्यावसायिक, प्रदर्शनप्रिय और असंवेदनशील पत्रकारिता की आलोचना है; सभी पत्रकारों पर एक समान आरोप नहीं है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यह पंक्ति टी.वी. पत्रकारिता के अहंकारी, संवेदनहीन और प्रदर्शनप्रिय रूप को उजागर करती है। पत्रकार स्वयं को शक्तिशाली मानकर दुर्बल व्यक्ति की पीड़ा को दर्शकों के मनोरंजन और कार्यक्रम की लोकप्रियता का साधन बनाते हैं। मानवीय सहानुभूति पीछे रह जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस पंक्ति में मीडिया की शक्ति के अहंकार और पीड़ा को तमाशा बनाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है।

त्वरित सुझाव: समर्थ और दुर्बल का विरोध समझाकर उसे पीड़ा के प्रदर्शन तथा लोकप्रियता की चाह से जोड़िए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

सूर्योदय से उषा की जादुई शक्ति का प्रभाव कैसे टूटता दिखाई दे रहा है ? 'उषा' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषाकाल के बदलते रंगों को घरेलू और प्राकृतिक बिंबों से मूर्त करती है।
- जादू का आशय भोर की क्षणिक, मोहक रंग-छटा है; यह कोई वास्तविक अलौकिक शक्ति नहीं है।

चरण 1: उषाकाल की रंग-छटा पहचानिए सूर्योदय से पहले आकाश की नीलिमा, राख से लीपे चौके जैसी धूसरता और केसर जैसी लालिमा बदलते दृश्य रचती हैं। कवि को यह परिवर्तन रहस्यमय और मोहक लगता है। इसीलिए भोर की रंग-लीला जादू के समान प्रतीत होती है।

चरण 2: सूर्योदय से हुए परिवर्तन को जोड़िए जैसे ही सूर्य क्षितिज पर उभरता है, उसका स्पष्ट प्रकाश फैलने लगता है। पहले दिखाई देने वाली विविध कोमल छवियाँ लुप्त होने लगती हैं और दिन का उजाला स्थापित हो जाता है। जादू टूटने का अर्थ इसी मनोहारी संक्रमण का समाप्त होना है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर उषा आकाश में नीलिमा, धूसरता और केसर जैसी लालिमा के बदलते बिंब रचकर जादुई वातावरण बनाती है। सूर्य उदित होते ही उसका तेज फैल जाता है। भोर की कोमल, रहस्यमयी रंग-छटाएँ मिटने लगती हैं और दिन के प्रकाश में उषा का जादू टूट जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष सूर्योदय का स्पष्ट प्रकाश उषा की क्षणिक रंग-लीला समाप्त कर देता है।

त्वरित सुझाव: जादू को भोर की बदलती रंग-छटाएँ मानिए और उसका टूटना सूर्य के स्पष्ट प्रकाश से समझाइए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

तुलसीदास जी के युग और वर्तमान युग की बेकारी के कारणों में कौन-कौन सी समानताएँ हैं ? 'कवितावली' से उद्धृत छंदों के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास के छंद किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक की आजीविका छिनने के माध्यम से व्यापक आर्थिक संकट दिखाते हैं।
- दो युगों की तुलना में समान मूल स्थितियाँ बतानी हैं; आधुनिक युग की प्रत्येक समस्या को तुलसी के समय पर आरोपित नहीं करना है।

चरण 1: कवितावली का सामाजिक संकेत समझिए छंदों में किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार और सेवक को चाकरी नहीं मिलती। अनेक वर्गों के लिए जीविका के साधन बंद हैं। यह अकेले किसी व्यक्ति के आलस्य का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का संकट है।

चरण 2: वर्तमान से समानता स्थापित कीजिए आज भी गरीबी, संसाधनों और अवसरों का असमान वितरण तथा काम चाहने वालों के अनुपात में रोजगार की कमी बेकारी बढ़ाती है। दोनों युगों में कमजोर वर्ग अपनी मेहनत के बावजूद आजीविका से वंचित होता है। तुलना का केंद्र यही साझा आर्थिक विवशता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर तुलसी के युग की तरह आज भी गरीबी, आर्थिक विषमता, सीमित आजीविका-साधन और शोषण बेकारी के कारण हैं। तब किसान, व्यापारी और सेवक काम से वंचित थे; आज भी श्रम करने की इच्छा होते हुए रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों युगों की समानता आर्थिक विषमता और पर्याप्त आजीविका के अभाव से उत्पन्न बेकारी में है।

त्वरित सुझाव: किसान, व्यापारी और सेवक की आजीविका का उल्लेख करके आज के अवसरों की कमी से तुलना कीजिए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
महादेवी वर्मा ने भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद किसे कहा है और उस परिच्छेद में भक्तिन का अनुभव कैसा रहा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा भक्तिन के जीवन को अलग-अलग परिच्छेदों में रखकर उसके संघर्षपूर्ण अनुभवों को उभारती हैं।
- दूसरे परिच्छेद में गृहस्थ जीवन, कन्याओं के जन्म पर पारिवारिक भेदभाव तथा पति का सहयोग प्रमुख हैं।

चरण 1: दूसरे परिच्छेद की पहचान कीजिए भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद उसका गृहस्थ जीवन है। पहली पुत्री के बाद उसने दो और पुत्रियों को जन्म दिया। पुत्र को श्रेष्ठ मानने वाले परिवार में तीन बेटियों की माँ होने के कारण उसे सम्मान के स्थान पर उपेक्षा मिली। यह उसका दोष नहीं, परिवार की पक्षपाती मानसिकता थी।

चरण 2: भेदभाव और सहारे के अनुभव लिखिए सास और जिठानियाँ स्वयं आराम करतीं, जबकि भक्तिन तथा उसकी बेटियों पर श्रम का भार रहता। भोजन में भी भेदभाव होता था। इस कठिन अनुभव के बीच उसका पति उसे स्नेह और सम्मान देता था। उसके सहयोग से अलग गृहस्थी बसाना संभव हुआ। इसलिए इस परिच्छेद में थोड़े सुख के साथ अधिक दुख और संघर्ष दिखाई देते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर महादेवी वर्मा ने भक्तिन के गृहस्थ जीवन को उसके जीवन का दूसरा परिच्छेद कहा है। तीन बेटियाँ होने पर उसे सास और जिठानियों की उपेक्षा सहनी पड़ी। उससे और बेटियों से कठिन काम कराए जाते तथा भोजन में भेदभाव होता था। पति उसे प्रेम और सम्मान देता था। उसके सहयोग से अलग गृहस्थी बसी, किंतु इस परिच्छेद में सुख की अपेक्षा दुख अधिक रहा।

चरण 4: निष्कर्ष दूसरा परिच्छेद भक्तिन का संघर्षपूर्ण गृहस्थ जीवन है, जिसमें पारिवारिक उपेक्षा के बीच पति का स्नेह उसे सहारा देता है।

त्वरित सुझाव: दूसरे परिच्छेद में गृहस्थ जीवन, तीन बेटियाँ, भेदभाव और पति का सहयोग क्रम से लिखिए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से गर्वित लोगों का बाज़ार पर क्या प्रभाव पड़ता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्रयशक्ति का अहंकार विवेकपूर्ण खरीदारी को बाधित करता है।
- बाज़ार की सार्थकता वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति और उपयोगी वस्तुओं के विनिमय में है।

चरण 1: पाठ में बताए उपभोक्ता का स्वभाव समझिए पर्चेजिंग पावर से गर्वित व्यक्ति के लिए धन खर्च कर सकना ही अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण बन जाता है। वह पहले अपनी जरूरत तय नहीं करता, बल्कि वस्तुओं के आकर्षण और अपनी आर्थिक क्षमता के प्रदर्शन से प्रभावित होता है। इसीलिए उसकी खरीदारी आवश्यकता के स्थान पर अहंकार और प्रतिस्पर्धा से संचालित होती है। इस प्रवृत्ति में वस्तु की उपयोगिता गौण हो जाती है।

चरण 2: बाज़ार पर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट कीजिए ऐसे खरीदार बाज़ार को जरूरत पूरी करने वाले क्षेत्र से दिखावे और अनावश्यक खरीदारी का क्षेत्र बनाते हैं। इससे बिक्री के लिए आकर्षण, छल और अपव्यय को बढ़ावा मिलता है तथा सद्भाव घटता है। पाठ में आवश्यकता जानकर सीमित खरीदारी करने वाले व्यक्ति का व्यवहार इस प्रवृत्ति से भिन्न है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर से गर्वित लोग आवश्यकताओं के स्थान पर धन के प्रदर्शन के लिए खरीदारी करते हैं। वे बाज़ार की चकाचौंध में अनावश्यक वस्तुएँ खरीदकर अपव्यय और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाते हैं। ऐसे ग्राहकों से बाज़ार का छल-कपट बढ़ता है और सद्भाव घटता है। इस प्रकार वे बाज़ार को वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के उपयोगी कार्य से भटकाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष क्रयशक्ति का अहंकार बाज़ार में अपव्यय, दिखावे और छल को बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले खरीदारी का उद्देश्य और फिर बाज़ार पर उसके परिणाम का संबंध स्पष्ट करें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक ने किन अंधविश्वासों की ओर संकेत किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में वर्षा से जुड़ी लोकमान्यताओं और लेखक की तार्किक दृष्टि का द्वंद्व मिलता है।
- इंदर सेना के अनुष्ठान के प्रसंग से अंधविश्वासों की पहचान करनी चाहिए।

चरण 1: लोकमान्यता का प्रसंग पहचानिए सूखे के समय गाँव के लड़कों की इंदर सेना घर-घर जाकर पानी माँगती थी। लोग उन पर पानी उड़ेलते और उन्हें कुछ खाने को देते थे। इस क्रिया को इंद्र को प्रसन्न करने और वर्षा कराने का साधन माना जाता था। यह वर्षा और अनुष्ठान के बीच अप्रमाणित कारण-संबंध स्थापित करने वाला विश्वास है। प्रसंग की व्याख्या में दोनों दृष्टियों का अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 2: लेखक और जीजी की दृष्टियों का भेद समझिए लेखक पानी की कमी के बीच उसे इस तरह बहाना व्यर्थ समझता है। जीजी इसे दान, त्याग और सामूहिक लोकविश्वास से जोड़ती हैं। अतः उत्तर में अनुष्ठान को वर्षा का वैज्ञानिक कारण नहीं बताना चाहिए। पाठ अंधविश्वास के साथ लोकजीवन में निहित आस्था और परोपकार के भाव को भी सामने लाता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने इंद्र को प्रसन्न करके वर्षा कराने के अंधविश्वास की ओर संकेत किया है। इंदर सेना के लड़कों पर पानी उड़ेलना और उन्हें अन्न देना वर्षा लाने का उपाय माना जाता था। सूखे में पानी की इस बर्बादी पर लेखक प्रश्न उठाता है। जीजी इसे दान और त्याग से जोड़ती हैं, किंतु इससे वर्षा होने का वैज्ञानिक आधार नहीं मिलता।

चरण 4: निष्कर्ष वर्षा के लिए इंदर सेना पर पानी उड़ेलने और अन्न देने का अनुष्ठान मुख्य अंधविश्वास है।

त्वरित सुझाव: इंदर सेना के ठोस प्रसंग से उत्तर शुरू करें और लोकविश्वास को वैज्ञानिक तथ्य की तरह न लिखें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती थी, कैसे। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी के प्रसंग में अंधकार, सन्नाटा और मृत्यु का भय रात्रि को विभीषिकामय बनाते हैं।
- ढोलक की ध्वनि जीवन-संघर्ष और साहस की प्रतीक है।

चरण 1: रात्रि के भय का कारण बताइए महामारी से ग्रस्त गाँव में रात का अंधकार, सन्नाटा, कराहें और मृत्यु की आशंका वातावरण को भयावह बनाते थे। ग्रामीण शारीरिक कष्ट के साथ निराशा से भी जूझ रहे थे। इस पृष्ठभूमि में ढोलक का बजना केवल मनोरंजन नहीं, भय का सामना करने वाली जीवित मानवीय शक्ति की आवाज बनता है। ढोलक रोग का उपचार नहीं करती, पर मानसिक संबल देकर पीड़ा सहने की शक्ति बढ़ाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से पीड़ित गाँव में रात का सन्नाटा, कराहें और मृत्यु का भय छाया रहता था। ऐसे में पहलवान की ढोलक की गूँज लोगों को साहस और जीवन-संघर्ष की प्रेरणा देती थी। उसकी निर्भीक ध्वनि भयावह निस्तब्धता को तोड़कर निराशा को चुनौती देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक भय और निराशा के बीच ग्रामीणों में जीने का साहस जगाती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक की आवाज का संबंध महामारी से डरे लोगों के मनोबल से जोड़कर उत्तर लिखें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
शिरीष का फूल अपने जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार किस प्रकार करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खिलकर जिजीविषा का उदाहरण बनता है।
- अवधूत की तरह अनासक्ति और मस्ती उसके जीवन-संदेश के आधार हैं।

चरण 1: शिरीष के आचरण का आशय समझिए भीषण गर्मी और लू में भी शिरीष कोमल फूलों से लदा रहता है। बाहरी प्रतिकूलता उसकी सहज प्रसन्नता को नष्ट नहीं करती। लेखक उसके इसी स्वभाव में अनासक्त जीवन की शक्ति देखते हैं। यहाँ अजेयता का अर्थ कठिनाइयों से बचना नहीं, उनके बीच अपनी सरसता और मस्ती को बनाए रखना है। इस व्यवहार में विपत्ति के बीच जीवन के प्रति आस्था और आत्मबल की रक्षा निहित है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर शिरीष भीषण गर्मी और लू में भी कोमल फूलों से खिलकर अपनी अजेय जिजीविषा प्रकट करता है। वह प्रतिकूल परिस्थितियों से विचलित हुए बिना सरस और मस्त रहता है। इस प्रकार वह अनासक्ति, धैर्य और विपत्तियों में भी प्रसन्न रहने का संदेश देता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष विपरीत मौसम में भी खिलकर निर्भय, अनासक्त और प्रसन्न जीवन का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिकूल मौसम और शिरीष की बनी रहने वाली सरसता को कारण और संदेश के रूप में जोड़ें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
आदर्श समाज की संकल्पना के बारे में डॉ. आंबेडकर के क्या विचार हैं ? उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है।
- लोकतंत्र सामाजिक जीवन में परस्पर सम्मान और सहभागिता की पद्धति भी है।

चरण 1: आदर्श समाज के आधार स्पष्ट कीजिए डॉ. आंबेडकर के अनुसार समाज में परिवर्तन और विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क के अवसर खुले होने चाहिए। कुछ लोगों के हितों तक सीमित व्यवस्था आदर्श नहीं हो सकती। स्वतंत्रता और समान अवसरों के साथ भाईचारा आवश्यक है, जिससे लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी हों और सामाजिक भेदभाव कमजोर पड़े। यह व्यवस्था सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर डॉ. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है। उसमें सभी को विकास के समान अवसर मिलें, जातिगत भेदभाव न हो और विभिन्न वर्गों में खुला संपर्क रहे। पारस्परिक सम्मान, सहभागिता और परिवर्तन की गुंजाइश से ही वास्तविक लोकतांत्रिक समाज बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वतंत्रता, समता, भाईचारा और खुला सामाजिक संपर्क आंबेडकर के आदर्श समाज के आधार हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों आधार लिखने के बाद उनके व्यावहारिक अर्थ के लिए समान अवसर और परस्पर संपर्क जोड़ें।